जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२६ अंक -११ जुलाई २०२४ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य - १५० रूपए प्रति

भारत के इतिहास में पहली बार

२२ भारतीय भाषाओं में

'भारत नाम सम्मान' गीत की रिकार्डिंग

भारत के प्रधान मंत्री को उपहार स्वरूप दी जाएगी

ताकि भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ से INDIA नाम को विलुप्त किया जा सके

पढ़े पृष्ठ ३ पर

आव्हानकर्ता व निवेदनकर्ता

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत अंतर्राष्ट्रीय संस्थान

राष्ट्रीय कार्यालय : बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059

कोलकाता कार्यालय : ऑफिस नं.77, सदासुख कटरा, दूसरा तल्ला, 201/बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत-700007

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

The Byke

Brightland

ADVENTURE

Park & Resort, Matheran

OPULENTS ROOMS

CRYSTAL POOL

SAVORY DELIGHTS

THRILLING ADVENTURE ACTIVITIES

- Air Cycling
- Zipline
- Burma Bridge
- Net Travellings
- Zig Zag Skywalk
- Commando Bridge
- Horizontal Ladder
- Archery
- I & H Sky Bridge
- Sky Ring Bridge
- Xtreme Sky Cross
- Sky Trolley
- Vertigo Circuits
- Cobweb Wet
- Rock Climbing
- Upside Down Ladder

+91 8080 700 999 | stay@thebyke.com | www.thebyke.com

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

बधाईयाँ बधाईयाँ बधाईयाँ

Scan QR Code

Only Bharat Name

सहयोग करें
भारत का
सम्मान बढायें

बिजय कुमार जी!

आपके समर्पण ऐतिहासिक किर्तिमान से भारत के इतिहास में पहली बार 22 विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'भारत नाम सम्मान' (7 मिनट) के गाने की रिकार्डिंग हो पाई है, जिसके लिए आप बधाई व अभिनंदन के पात्र हैं, आपका समर्पण व मेहनत ही एक दिन विश्व के मानचित्र Globe में INDIA की जगह BHARAT जरूर से जरूर लिखा जाएगा। जय भारत!

शुभकामनाओं सहित

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

* अंतर्राष्ट्रीय पदाधिकारी *

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300

कार्यालय प्रतिनिधि	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक	राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक	राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई	अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका	किशोर जैन, लंदन, यूके	दिलिप सेन, मुंबई	रवि जैन, मुंबई
मो. 9702205252	मो. 01(919)610-7106	मो. 044 (770) 3827595	मो. 93228 66476	मो. 8108843571

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए **INDIA** नहीं, जय भारत!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अगला अंक

चातुर्मास भाग - २

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

BASANTILAL SANCHETI JAIN
Mob. 098199 76662

Prathmesh Gold

Specialist in Bangles

204, Golden Plaza, 2nd Floor, 93/95, Dhanji Street, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 003
Tel.: +91-22-23468222 / 61832199 / 49117305 / 33527305
E-mail: prathmeshgold92@gmail.com

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

चातुर्मास क्यों?

जीवन का सच्चा सुख परिधि से केन्द्र में जाने में है, अंतरजागरण करो और जीवन को धर्ममय बनाओ।

चातुर्मास में श्रावक-श्राविकाओं के करने योग्य नौ प्रकार का शुद्ध आचरण उपादेय कहा गया है:

१) सामायिक प्रतिक्रमण २) देव दर्शन ३) पौषध ४) देवार्चन
५) स्नात्रपूजा ६) बह्मचर्य ७) क्रिया ८) दान ९) तप

यह नौ शुद्धाचरण चार्तुमास के अलंकार है, इन नौ विधानों के प्रयोग से नौ निधानों की प्राप्ति होती है।

वर्षावास-चार्तुमास क्यों?

१) आत्मा से परमात्मा की ओर जाने के लिये...
२) अहं से अर्हम की ओर जाने के लिये...
३) आत्मशक्ति से अनासक्ति की ओर जाने के लिये...
४) हिंसा से अहिंसा की ओर जाने के लिये...
५) उपासना, स्वाध्याय, साहित्य सर्जन, सम्यगदृष्टि जनजागरण, आराधना, तपस्या, तप, जप के लिये...
६) योगी जीवन जीने के लिये...
७) जैन-शासन की पुण्य प्रभावना के लिये...
८) क्रोध से क्षमा की ओर जाने के लिये...
९) एक-एक क्षण का उपयोग याने प्रमाद रहित जीवन जीने के लिये...

१०) जीवन को स्तम्भ बनाने के लिये...
११) संत-दर्शन-संत वाणी ग्रहण करने के लिये...
१२) आत्मशुद्धि करने के लिये...

इन चार महिने में हमें धर्म आराधना के शिखर की ओर जाना हैं। वर्तमान चार्तुमास में आचार्य भगवन-साधु-साध्वियों के सान्निध्य में हम अपना आत्म लक्ष्य साधें और अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने की राह पर ले जायें। 'दुसरों को नहीं स्वयं को निहारना चाहिये, आत्म कषायों को संयम से बुहारना चाहिये, दर्पण में देह के रुप को क्या देखें, आत्मारुपी परमात्मा को निखारना चाहिये।

- श्रीमती संतोष जैन, मुंबई

जय गुरू नाना जय महावीर जय गुरू राम
चातुर्मास पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन
हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना
राम चमक रहे भानु समाना
PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH PRE ACCREDITED
SHREE JAIN HOSPITAL & RESEARCH CENTRE
A MULTI SPECIALITY HOSPITAL
493B/12, G. T. Road (S), Howrah, West Bangal, Bharat - 711 102 PH: 033-26415831/09
E-mail: jainhowrah@gmail.com
Web: www.shreejainhospital.com

चातुर्मास के पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन
आचार्य श्री शिवमुनिजी महाराज
परस्परोपग्रहो जीवानाम
Kishore Kumar Mutha
अध्यक्ष- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणोपासक संघ रामकोट
Mob: 92473 99003
Pratik Kumar Mutha Pranay Kumar Mutha
Jk jewellers
16-9-831/3/4, Saroji Nagar Colony, Old Malakapet, Telengana, Hyderabad, Bharat- 508236
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

२७ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२६, अंक ११, जुलाई २०२४

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४

अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ० **सम्पादकीय** ० दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

अमेरिका का हर जैन कहता है 'हम सब जैन हैं'

मेरी १५ दिनों की अमेरिका में स्थापित 'न्यू जर्सी' की यात्रा अभूतपूर्व व सुखदपूर्वक रही, मुझे भी जीवन में पहली बार 'अमेरिका' घूमने को मौका मिला, क्योंकि मेरा सुपुत्र 'निहाल' (२५) वर्तमान में अमेरिका के 'न्यू जर्सी' में निवासित है और विश्व प्रसिद्ध 'अमेजॉन' कंपनी में कार्यरत है। बहुत ही अच्छा माहौल अमेरिका का देखने को मिला, विशेषकर जब अमेरिका में स्थापित जैन मंदिरों के दर्शन किए, तो वहां पर जो देखने को मिला, बरबस यह लिखने को मन कर गया, क्योंकि हर अमेरिका निवासी कहता है 'हम सब जैन हैं'। अमेरिका में दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथ समुदाय के निवासित हर श्रावक-श्राविका को यह कहते देखा गया कि 'हम सब जैन हैं'। कई लोगों से वार्तालाप भी हुई, बोले की हम जरूर अमेरिका के निवासी हैं, पर 'हम सब जैन हैं'।

काश! अमेरिका में निवासित जैनों के जो विचार हैं, वे विचार 'भारत' के जैनों के भी बनें तो कितना अच्छा हो?

मैं 'चातुर्मास' के पावन पर्व पर हर गुरु भगवंतो के चरणों में निवेदन करता हूं कि हम श्रावक-श्राविकाओं का मार्गदर्शन करें, हमें आशीर्वाद दें कि हम केवल 'जैन' रहें, 'दिगम्बर और श्वेताम्बर' यह तो केवल आमनायें हैं, वह अपनी जगह पर जरूर रहे, लेकिन धर्म के अनुसार हम सभी २४ तीर्थंकर की अनुयाई रहें, क्योंकि 'णमोकार मंत्र' हम सभी का एक ही है।

समस्त जैन पंथों की एकमात्र पत्रिका 'जैन एकता' के लिए प्रयासरत 'जिनागम' के प्रस्तुत अंक में हमने जैन तेरापंथ धर्मसंघ का संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित करने का प्रयास किया है, साथ ही तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य श्री भिक्षु के बारे में भी संक्षिप्त परिचय लिखा है, विश्वास है मुझे, की आप सभी को अच्छा लगेगा।

निवेदन यह भी है कि जहां-जहां इस वर्ष चातुर्मास आयोजित किए गए हैं, वहां के सभी श्रावक-श्राविका गुरु भगवंत के चरणों में निवेदन करें कि दिगम्बर समुदाय का यदि चातुर्मास हो रहा है तो वहां पर श्वेताम्बर समुदाय के श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान करें, उन्हें ससम्मान निमंत्रित करें, श्वेताम्बर समुदाय का चातुर्मास है तो दिगम्बर समुदाय के श्रावक-श्राविकाओं को बुलाएं, सम्मानित करें, तो बहुत ही अच्छा होगा, प्यार बढ़ेगा, समन्वय बढ़ेगा और समन्वय के साथ व्यापार भी बढ़ेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा होने से २०२४ के चातुर्मास समापन पर 'भारत' के हर चातुर्मास स्थल से घोषणा होगी कि 'हम सब जैन हैं', २४ तीर्थंकर के अनुयाई हैं, 'णमोकार मंत्र' हमारा एक है, 'जियो और जीने दो' संदेश है हमारा, 'अहिंसा परमो धर्म' नारा है हमारा।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान की सफलता के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्था 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' ने विभिन्न २२ भारतीय भाषाओं का गीत 'भारत नाम सम्मान' का निर्माण किया है, जिसकी प्रति हम बहुत जल्द भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केंद्रीय गृह मंत्रालय के साथ विभिन्न मंत्रालयों व 'भारत' के विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री को भी एक प्रति सदिच्छा पूर्वक भेंट करेंगे और निवेदन करेंगे कि 'भारत' के साथ विदेशों में रहने वाले हर भारतीय चाहते हैं कि अब हमारे देश का नाम एक ही रहे 'भारत', इंडिया नाम में गुलामी की झलक मिलती है, विश्व के मानचित्र GLOBE में हमारे देश का नाम जहां INDIA लिखा है वहां पर BHARAT लिखा जाए। आप सभी के सहयोग व मार्गदर्शन से ही 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं अभियान सफल हो सकेगा। **- जय जिनेंद्र!**

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

चातुर्मास प्रारंभ

प्रस्तुति 'जिनागम' के द्वारा

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा तद्नुसार दि. १७ जुलाई बुधवार से चातुर्मास का श्रीगणेश हो रहा हैं और ठीक ४ माह बाद यानी कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को समाप्ति होगी। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा आषाढ़ी अष्टान्हिका पर्व का अन्तिम दिन है और आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा गुरुपूर्णिमा का पर्व का भी दिन हैं। गुरु पूर्णिमा की मान्यता हमारे देश में उस समय सर्वत्र व्याप्त थी जब कि देश में गुरुकुल के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षण दिया जाता था। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा ३ कारणों से महत्वपूर्ण हैं, प्रथम यह कि साधु सन्तों का चातुर्मास प्रारंभ होता हैं, द्वितीय यह कि अष्टान्हिका का अन्तिम दिन हैं, तृतीय यह है कि गुरुपूर्णिमा का प्रतीक दिन हैं। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की रात्रि को साधु सन्त चातुर्मास की योग धारणा करते हैं। चातुर्मास में एक ही स्थान पर रहकर धर्मसाधना करते हुए मार्गशीर्ष कृष्ण १ को विहार करते हैं।

चातुर्मास के दिन बड़े पवित्र दिन होते हैं, गृहस्थ और साधु दोनों के लिए धर्मसाधना के दिन होते हैं, पर इसका यह अर्थ नहीं कि शेष ८ मास तक धर्म-कर्म से विराम ले लेना चाहिए, यहां हमारा प्रयोजन चातुर्मास की विशेषता एवं महत्ता बतलाना है। चातुर्मास में आचार्य साधु गण अपने संघ सहित ही एक स्थान पर विराजमान रहते हैं। चातुर्मास में विहार न करने का एक ही मुख्य कारण है कि इन दिनों जलवृष्टि होने से असंख्य प्रकार के त्रस कीटाणुं जीव (जलमिट्टी के संयोग से) पैदा हो जाते हैं, इनमें से अनेक त्रस कीटाणु तो इतने सूक्ष्म होते हैं कि चक्षु इन्द्रिय से भी नहीं देखे जा सकते। जलवृष्टि होने से सर्वत्र जल ही जल नजर आता हैं, आवागमन के मार्ग कीचड़ और पानी से भरे रहते हैं, अत: त्रस जीवों की रक्षा की दृष्टि से विहार नहीं करते, क्योंकि साधु का धर्म तो वीतराग धर्म हैं, अन्तरंग का राग जाने से ही (क्योंकि रागद्वेष ही भाव-हिंसा हैं। बाह्यरूप में जीवों की रक्षा की जाती है। (यानी द्रव्यहिंसा से बचा जाता हैं) दया करूणा का भाव ही रक्षा और वीतरागता में दया को प्रमुख स्थान प्राप्त है। पहले तो ऐसा होता था कि गृहस्थ लोग भी चातुर्मास के दिनों में बाहर जाते-आते नहीं थे। ८ महिना ही व्यापार धंधा कर १२ मास की खर्च लायक आय कर लेते थे और चातुर्मास के ४ महिने में उदासीनवृत्ति पूर्वक रहते हुए धर्म साधना करते थे। अधिक से अधिक समय मंदिर में ही शास्त्र स्वाध्याय एवं तत्वचर्चा करते हुए व्यतीत करते थे और अनेक ग्राम या नगर में किसी साधु, संत साध्वी, क्षुल्लक, ऐलक का चातुर्मास हो जाये तो अपना भाग्य सराहते थे।

आज भी हमारे समाज में शताधिक सहस्त्राधिक, मानव ऐसे भी हैं जो अपने पूर्वजों की संस्कृति को अपनाते हैं जहां साधु संतों के चातुर्मास होते हैं वहां के अनेक सज्जन अपने उत्तर दायित्व का पूर्ण निर्वाह करते हुए चातुर्मास को सफल बनाते हैं, पर इतने में ही सफलता की इतिश्री नहीं मान लेना चाहिए कि चातुर्मास के समय जो सज्जन बाहर से आयें, उनके निवास एवं भोजन की व्यवस्था करना, निश्चित समय पर मुनिराज के प्रवचन होना या ऐसे अवसर पर बाहर के विद्वानों को बुला लेना आदि-आदि। चातुर्मास की सफलता तो तब मानी जायेगी जबकि हम घोर परिग्रही बनें, इसकी जगह भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अपरिग्रह सिद्धांत को भीतर और बाहर से अपनाने लगें।

वर्तमान साधु समाज में अनेक साधुगण (मुनिराज) बहुश्रुताभ्यासी हैं, सिद्धांतज्ञ निष्पक्ष विद्वान हैं। स्याद्वाद के आधार पर वस्तु की विवेचना करते हैं। अनेक मुनिराज विविध भाषाओं के ज्ञाता एवं उनमें कुछ डिग्री होल्डर (बी.ए., बी.एस.सी., एम.बी.बी.एस.) भी हैं, अनेक मुनिराज लेखक, कवि, साहित्यकार ग्रन्थ निर्माता हैं, अनेक मुनिराज जिनागम के अध्येता एवं आध्यात्मिकता से ओतप्रोत हैं, ऐसे विद्वान निर्ग्रन्थ मुनियों से हमारा करबद्ध निवेदन है कि वे सार्वजनिक उपयोगी मानवता निर्माण के लिए नूतन मौलिक साहित्य का (ट्रेक्ट, पुस्तक, लघुकाय आदि) निर्माण करें।

निर्ग्रन्थ साधु मानव समाज के सत्पथ प्रदर्शक होते हैं। वे मोक्षमार्ग पर स्वयं चलते हैं और जनता के लिए इसी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देते हैं। धर्म के नाम पर जो ढोंग आडम्बर पाखण्ड हो रहा हैं उसमें वे सुधार करके सही दिशा जनता को देते हैं, इस दृष्टि से साधु सुधारक भी होता हैं और समाज का नेता भी होता हैं।

आज के युग में मानव घोर जड़वादी भौतिकवादी हो गया हैं, अर्थ को ही परमात्मा मान बैठा हैं, इसी कारण जगत में जो कुछ अन्धाधुन्धी चल रही हैं वह स्पष्ट ही है, ऐसे अवसर पर परमोपकारी निर्ग्रन्थ वीतराग साधु मानव समाज को सही दृष्टि देकर कल्याण मार्ग पर लगाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं।

समस्त जैन समाज की एकमात्र पत्रिका, जैन एकता के लिए प्रयासरत 'जिनागम' परिवार का निवेदन यही हैं कि चातुर्मास के समय मुनिराजों के उपदेश या प्रवचनों के माध्यम से हम अपने आपको समझने का प्रयत्न करें कि हम क्या हैं हमारा कर्तव्य क्या हैं, हम जो कर रहे हैं क्या उसका धर्म से अलगाव हैं, इस सूत्र की हमेशा याद रखना चाहिए कि समझना समझने से आता हैं उसके अतिरिक्त अन्य तो निमित्त मात्र हैं, बस समस्त जैन समाज की एकमात्र पत्रिका 'जैन एकता' के लिए प्रयासरत 'जिनागम' परिवार तो 'चातुर्मास' पर्व में 'जैन एकता' अभियान की सफलता चाहता है।

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति से पुण्य अर्जित कर मनुष्य जीवन को सार्थक करें- आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

बांसवाड़ा: प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की मूल बालब्रह्मचारी पट्ट परंपरा के पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी बांसवाड़ा की खांदू कॉलोनी में १००८ श्री श्रेयांशनाथ जिनालय में संघ सहित विराजित है। आज मुनि श्री पुण्यसागर जी का १८ साधु सहित गुरु चरण वंदना हेतु १७ वर्षो के बाद मिलन हुआ, इस धर्म के अवसर को देखने के लिए बांसवाड़ा राजस्थान के अनेक नगर मध्य प्रदेश, असम, कोलकाता, महाराष्ट्र, गुजरात आदि विभिन्न नगरों से हजारों भक्त उपस्थित थे, इस कार्यक्रम में देश के प्रसिद्ध भामाशाह आर.के. मार्बल ग्रुप के अशोक पाटनी, सुरेश पाटनी, कटारिया ग्रुप अहमदाबाद के सौभाग्यमल कटारिया, राकेश सेठी कोलकाता, दिनेश खोड़निया सागवाड़ा, सहित हजारों भक्त इस अवसर पर उपस्थित थे।

दिन की शुरुआत १००८ श्री श्रेयांश नाथ भगवान के अभिषेक बाद श्री जी की शांतिधारा का सौभाग्य आर.के. मार्बल ग्रुप के अशोक जी, सुरेश जी पाटनी परिवार किशनगढ़ को प्राप्त हुआ, अन्य पुण्यार्जक परिवारों द्वारा भी शांतिधारा की गई, इसके बाद सिंटेक्स गेट पर संघ के सभी २८ साधु आचार्य श्री अजीतसागर जी के शिष्य मुनि श्री पुण्य सागर जी महाराज की अगवानी हेतु उपस्थित हुए, इस अवसर पर सुबह से ही भक्तों का ताता स्वागत और आगवानी करने के लिए लगा था। मुनि हितेंद्र सागर जी सहित सभी साधुओं ने मुनि पुण्यसागर जी की अगवानी की शोभायात्रा का समापन श्री श्रेयांसनाथ जिनालय में हुआ, जहां पर विराजित आचार्य श्री वर्धमान सागर जी की चरणवंदना चरणाभिषेक पंचामृत द्रव्यों से की इस के पश्चात संघ के सभी साधुओं ने आचार्य श्री की वन्दना की। आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के चित्र का अनावरण आर.के. मार्बल ग्रुप के अशोक जी, सुरेश जी, श्रीमती सुशीला, श्रीमती तारिका पाटनी एवं परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया, उनके साथ में बाहर से पधारे अतिथि सौभाग्यमल कटारिया अहमदाबाद राकेश सेठी कोलकाता सहित सुरेश खोड़निया सागवाड़ा, सुरेश सबलावत, वीणा दीदी, गज्जू भैया तथा आचार्य श्री के गृहस्थ अवस्था के भतीजे पारस पंचोलिया, अखिलेश जैन इंदौर ने किया। आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन आर.के. मार्बल परिवार द्वारा किया गया। 'जिनवाणी' भेंट करने का सौभाग्य सौभाग्यमल कटारिया अहमदाबाद को प्राप्त हुआ। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने प्रवचन में श्रीमद् जैन धर्म की व्याख्या करते हुए आचार्य श्री ने बताया कि हमारा धर्म लक्ष्य लक्ष्मी वान है, हमारा आशय भौतिक लक्ष्मी से नहीं होकर केवल ज्ञान मोक्ष रूपी लक्ष्मी से है जो विनाश को प्राप्त नहीं होती। प्रथमाचार्य आचार्य शांतिसागर जी की कृपा हुई कि उन्होंने लुप्त होते मुनि धर्म को संबल अपनी क्रियाओ से दिया, उन्होंने अपने जीवन को प्रयोगशाला बनाया, चारित्र के सभी अंगों का पालन किया। आज जो स्वतंत्र मुनियों का बिहार हो रहा है, यह आचार्य शांतिसागर जी की देन है। समाज सेठ अमृतलाल अनुसार आचार्य श्री ने बताया कि आप लौकिक लोगों को परिवार के रिश्तेदारों से मिलने पर खुशी होती है, हम साधुओं को भी साधुओं से मिलने में प्रसन्नता होती है। आचार्य अजीतसागर जी के शिष्य मुनि पुण्यसागर जी अपने संघ सहित १७ वर्षो के बाद हमारे दर्शन चरण वंदना हेतु पधारे हैं, आप संघ परंपरा के शिष्य मुनि है, जब संघ के साधु मिलते हैं तब हृदय में प्रसन्नता होती है और मुनि श्री पुण्यसागर जी संघ की वृद्धि करके आए हैं स्वयं के साथ शिष्यों को भी दर्शन कराए हैं। आचार्य अजीत सागर जी ने हमें आचार्य पद का भार सोपा। हर परिवार का मुखिया चाहता है कि परिवार से दूर सदस्य वापस परिवार में

रहे ऐसे ही संघ नायक भी चाहते हैं कि उनकी परंपरा की उनके साधु साथ में रहे। अभी आचार्य शांति सागर जी महाराज का आचार्य शताब्दी महोत्सव की शुरुआत अक्टूबर २०२४ से अक्टूबर २०२५ तक चलेगी, इस विशाल संघ सानिध्य में प्रभावना पूर्वक मनाने की हमारी भावना है।

आचार्य श्री शांतिसागर जी एवम् आचार्य श्री वर्धमानसागर जी की पूजन थांदला, धरियावद, पारसोला, बांसवाड़ा सहित अन्य नगर की समाज ने की। पूजन आर्यिका श्री महायश मति माताजी और वीणा दीदी ने कराई। पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी का ३५ वां आचार्य पदारोहण बांसवाड़ा की बाहुबली कालोनी में ३ दिवसीय कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। कमल सारगिया ने बताया कि आगामी जुलाई माह की ५ से ७ जुलाई आषाढ़ शुक्ल २ दूज को ३५ वां आचार्य पदारोहण विभिन्न कार्यक्रमो के साथ मनाया गया

वैसे अंग्रेजी दिनांक अनुसार २४ जून १९९० आषाढ़ सुदी २ को आचार्य पद मिला। खांदू कालोनी समाज द्वारा २४ जून को विशेष गुणानुवाद सभा रखी गई, जिसमें श्रावकों के साथ साधुगणोने भी भावांजलि अर्पित किया।

चातुर्मास स्व पर कल्याण

'चातुर्मास' स्व पर कल्याणक के लिए एक सुनहरा समय है। चातुर्मास साधक, साधु, साध्वी, श्रावक-श्राविका हेतु धर्म आराधना, साधना व धर्म प्रेरणा संदेश के लिए विशिष्ट महत्व रखता है। वर्ष भर में तीन 'चातुर्मासिक' पर्व आते हैं। आषाढ़ पूर्णिमा या (चतुर्दशी) कार्तिक पूर्णिमा व फाल्गुन पूर्णिमा इन तीनों में आषाढ़ी पूर्णिमा वर्षाकालीन का विशेष महत्व है। ८ माह पदयात्रा विचरण करने वाले संत-साध्वी वर्षावास हेतु एक ही स्थान पर चार माह के लिए स्थिर हो जाते हैं, इस समय में साधु-साध्वी, आत्म कल्याण, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना व जीवों की रक्षा तथा धर्म अनुष्ठानों की विशेष प्रेरणा देते हैं। वैसे तो मानव को हर पल, हर क्षण धर्म साधना करनी चाहिए, लेकिन विभिन्न दायित्वों के कारण बारह माह धर्म आराधना न कर सके, उनके लिए चातुर्मास के निकट आते ही श्रद्धालुजन, भक्तजन भगवान की वाणी श्रवण व साधना हेतु उत्सुक हो जाते हैं।

व्यवहार में भी 'चातुर्मास' का अपना विशेष महत्व है, इन दिनों हुई बरसात मानव को पूरे साल भर सरसता प्रदान करती हैं, जैसे कि एक राजा ने अपने सभासदों में प्रश्न किया कि बारह में से चार गए तो पीछे क्या बचेगा? कईयों ने उत्तर दिया-आठ, किन्तु राजा संतुष्ट नहीं, राजा ने महामंत्री से पुछा तो हाथ जोड़कर कहा कि- अन्नदाता बाहर में से यदि चार चले गये तो पीछे कुछ भी नहीं बचेगा। राजा ने पुछा-यह कैसे? मंत्री ने समाधान दिया कि महाराज एक वर्ष में बारह महिनों में वर्षा ऋतु के चातुर्मास के चार महिने निकाल दिये जाये तो शेष शुन्य ही रहेगा, यदि चातुर्मास के चार माह पानी नहीं बरसा तो शेष आठ माह में हा-हा कार, त्राहि-त्राहि मच जाएगी, क्योंकि एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के सभी जीवों के लिए जल आवश्यक है, मंत्री के उत्तर से राजा व सभी सभासद संतृष्ट हुए, जैसे जल के कारण ही चातुर्मास का महत्व बढ़ता है। (उसी प्रकार भगवान की वाणी रुपी वर्षा धर्म साधना, आराधना से ही चातुर्मास का महत्व बढ़ता है) क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष की ज्वाला से तपती हुई मन की धरती का शीतल और शांत बनाएंगे, हिंसा, स्वार्थ, वासना की गंदगी को दूर करने का प्रयास करेंगे, धर्म में अडिग रहते हुए सुख दुखों में समभाव रखेंगे। प्रभु वचनों को सदगुरु मुख से श्रवण कर अपने जीवन की दिशा बदलेगें। आत्म शोधन कर अपने प्रकृति स्वभाव में परिवर्तन लायेगें और दुर्गुणों को नाश कर सदगुणों का बीजारोपण करेंगे। व्यसनमुक्त संस्कारयुक्त जीवन के साथ हर वर्ग को जोड़ते हुए धर्म के सही मर्म को समझाते हुये स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या की ज्योति जलायेगें, तभी चातुर्मास का यह सुनहरा समय सार्थक होगा, तभी परम पद प्राप्ति की मंजिल की और अग्रसर हम हो पायेंगे।

-महेश नाहटा
नगरी, छत्तीसगढ़

!! जय तेरापंथ !! !! ॐ अर्हम् !! !! जय भारत !!

जय भिक्षु
(२९९ वाँ जन्म दिवस)
(२६७ वाँ बोधि दिवस)
१९ जुलाई

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

तेरापंथ स्थापना दिवस
(२६५ वाँ)
२१ जुलाई

आचार्य भिक्षु जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन्!

with best compliments from

L P Jain

Chennai

Mob: 8668044893

!! जय तेरापंथ !! !! ॐ अर्हम् !! !! जय भारत !!

जय भिक्षु
(२९९ वाँ जन्म दिवस)
(२६७ वाँ बोधि दिवस)
१९ जुलाई

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

तेरापंथ स्थापना दिवस
(२६५ वाँ)
२१ जुलाई

आचार्य भिक्षु जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन्!

Vineet Bothra
Mob: 9830354558

Vishal Bothra
Mob: 9331028287

Lab Equipments & Chemicals

OFFICE: 11, Pollock Street, Kolkata,
West Bengal, Bharat- 700001
Ph: 033 2235-1958 email: labquipindia@gmail.com

Residence: 34A, Bondel Road, Kolkata,
West Bengal, Bharat- 700019 Ph: 033-40016450

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

आत्मिक, आध्यत्मिक उत्थान का अवसर - चार्तुमास

'चार्तुमास' पर्वों की श्रृंखला है, यह स्वयं भी एक पर्व है और अनेक पर्वों का समवाय है। 'चार्तुमास' का प्रारंभ आषाढ़ की पूर्णिमा से होता है। व्यास, दैपायन जैसे कई श्रुतियों की यह जन्मतिथि हैं, इस दिन गुरु पूर्णिमा होने से इस तिथि का और विशेष महत्व हो जाता है, अनेक जैन आचार्यों का इतिहास इसके साथ जुड़ा है।

हमारा सबसे बड़ा पर्व पर्युषण तथा संवत्सरी महापर्व, क्षमा-याचना दिवस, इन्हीं चार महिनों के अंतर्गत आता है, जिससे इन चार महिनों का महत्व जैनों के लिये अत्याधिक बढ़ जाता है, ये चार माह धर्म आराधना के होते हैं। भौतिक जगत से दृष्टि हटाकर अंतस में झांकने का समय है यह। स्वयं को मांजने व तपाने का, सोने से कुंदन बनने का समय है चार्तुमास। बरसात के मौसम में अत्याधिक सुक्ष्म जीवों की उत्पति होती है और उससे सारी धरती आकीर्ण हो जाती है। आवागमन या विहार करने से उन जीवों का घात हो सकता है, अतः अहिंसा धर्म को सुक्ष्मता से पालन करने वाले सभी साधु-संत अपने शिष्यों सहित एक ही स्थान पर निवास करते हैं, 'वर्षायोग' की स्थापना करते हैं।

'चार्तुमास' की अवधि आषाढ पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक रहती है। 'भारत में' जैन साधु-साध्वी ही नहीं बल्कि अन्य धर्मों के साधु-संत भी इस क्रिया का पालन करते हैं तथा इस अवधि में ईश्वर का ध्यान करते हुए जीवदया, करुणा, सेवा, साधर्मिक भक्ति, व्रत, उपवास, परोपकार आदि प्रशस्त कार्यों को करते हैं तथा अपने भक्तों को करने की प्रेरणा भी देते हैं। वैसे तो साधु की गति सदैव नदी की निर्मल धारा की तरह होती है- सदैव चलते जाओ, बहते जाओ, लेकिन लोगों के अंदर धर्म की भावना प्रबल हो, इसलिये परोपकारी गुरु चार मास एक जगह रुकते हैं तथा हम श्रावकों को धर्म का मर्म समझाते हैं और सद्मार्ग पर चलने की सीख देते हैं, यही कारण है कि आज भी हमारा देश प्रगतिशील आधुनिक होते हुए भी उतना ही धार्मिक और परंपरावादी भी है।

सनातन धर्म में कहा जाता हैं कि 'चार्तुमास' के वक्त भगवान श्री विष्णु क्षीरसागर में शेषशय्या पर योगनिद्रा में शयन करते हैं, इसलिये इन महीनों में शादी-विवाह, गृहनिर्माण, यज्ञ आदि कार्य नहीं किये जाते, ये चार मास तप-तपस्या, जाप के लिये उपर्युक्त है।

अधिकतर हमारे धार्मिक त्यौहार इन्हीं चार महीनों के बीच में आते हैं। अधिकतर लोग श्रावण मास का व्रत, उपवास रखते हैं, इसलाम धर्म में भी रमजान के महीने में एक माह का व्रत रखने का प्रावधान है। पांचों वक्त की नमाज पढ़ना, दान देना, अपने पापों का प्रायश्चित करना, एक सच्चा मुसलमान 'कुरान' में लिखे गये नियमों का पालन करता है।

कहते हैं चार्तुमास में बालटी में एक-दो बिल्वपत्र डालकर मन में 'नमः शिवाय' का मंत्र ४-५ बार बोलकर स्नान करें तो विशेष लाभ होता है, उससे शरीर का वायु दोष दूर होता है और स्वास्थ्य स्वस्थ रहता है,

इस तरह से 'चार्तुमास' के अंतर्गत हमें अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त क्रियाओं का त्याग कर आत्मिक स्तर की क्रियाओं को मांजना होगा, तपाना होगा। शारीरिक व्रत के साथ-साथ मानसिक व्रत भी करना होगा, तभी हर तरह से हम आध्यात्मिक, आत्मिक उन्नति कर पायेंगे।

'चार्तुमास' में देवशयन का रुप हमें वाह्यमुखी वृतियों से हटकर अंतर्मुखी बनने का संदेश देता है। जीवन का सच्चा सुख परिधि से केन्द्र में जाने में है, अंतर जागरण करो और जीवन को धर्ममय बनाओ। 'चातुर्मास' में श्रावक-श्राविकाओं के करने योग्य नौ प्रकार का शुद्ध आचरण उपादेय कहा गया है।

१) सामायिक प्रतिक्रमण २) आवश्यक ३) पौषध ४) देवार्चन
५) स्नात्रपूजा ६) बह्मचर्य ७) क्रिया ८) दान ९) तप

यह नौ शुद्धाचरण 'चार्तुमास' के अलंकार है, इन नौ विधानों के प्रयोग से नौ निधानों की प्राप्ति होती है।

वर्षावास-चार्तुमास क्यों?

१) आत्मा से परमात्मा की ओर जाने के लिये।
२) अहं से अर्हं की ओर जाने के लिये।
३) आत्मशक्ति से अनासक्ति की ओर जाने के लिये।
४) हिंसा से अहिंसा की ओर जाने के लिये।
५) उपासना, स्वाध्याय, साहित्य सर्जन, सम्यगदृष्टि जनजागरण, आराधना, तपस्या, तप, जप के लिये। ६) योगी जीवन जीने के लिये।
७) जैन-शासन की पुण्य प्रभावना के लिये।
८) क्रोध से क्षमा की ओर जाने के लिये।
९) एक-एक क्षण का उपयोग याने प्रमाद रहित जीवन जीने के लिये।
१०) जीवन को होश स्तम्भ बनाने के लिये।
११) संत-दर्शन-संत वाणी ग्रहण करने के लिये।
१२) आत्मशुद्धि करने के लिये।

इन चार महिने में हमें धर्म आराधना के शिखर की ओर जाना है, इस चार्तुमास में आचार्य भगवन-साधु-साध्वियों के सान्निध्य में हम अपना आत्म लक्ष्य साधें और अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने की राह पर ले जायें। 'दुसरों को नहीं स्वयं को निहारना चाहिये, आत्म कषायों को संयम से बुहारना चाहिये, दर्पण में देह के रुप को क्या देखें, आत्मारुपी परमात्मा को निखारना चाहिये'। जय जिनेंद्र!

-मंजू लोढ़ा, मुंबई

चातुर्मास के पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन
Himanshu Ranka
Mob: 8356906939
JINI ENTERPRISE
SPECIALIST IN TOOL & ALLOY STEEL
Shreepati Castle Annex-1, 10th Khetwadi,
C-103, 1St Floor, Balwant Kolhatkar Marg,
Opp Union High School, Maharashtra, Mumbai,
Maharashtra, Bharat-400004
e-mail : jinienterprise109@gmail.com

100% Veg.

NAKODA

NOURISH

nakodagheetel

FRESHLY PRESSED

COLD PRESSED OILS

- Minimal Heating
- No Chemicals
- Manual Filtration
- 100% Natural

From the house of

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

BOOK YOUR ORDER NOW

8928882457 / 8591562269 / 8928586181 / 9137756585

www.nakodagheetel.com info@gheetel.com

FORTIFIED SAMPOORNA POSHAN SWASTH JEEVAN

MAKE IN INDIA

fssai Lic. No: 10017022005931

DAR KOSHER

APEDA

An ISO 22000: 2018 & HACCP Certified Company

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

श्वेताम्बर तेरापंथ (संक्षिप्त इतिहास)

श्वेताम्बर तेरापंथ जैन धर्म में श्वेताम्बर संघ की एक शाखा है, इसका उद्भव विक्रम संवत् १८१७ (सन् १७६०) में हुआ, इसका प्रवर्तन मुनि भीखण (भिक्षु स्वामी) ने किया था जो कालान्तर में आचार्य भिक्षु कहलाये, वे मूलतः स्थानकवासी संघ के सदस्य और आचार्य रघुनाथ जी के शिष्य थे।

आचार्य संत भीखण जी ने जब आत्मकल्याण की भावना से प्रेरित होकर शिथिलता का बहिष्कार किया था, तब उनके सामने नया संघ स्थापित करने की बात नहीं थी, परंतु जैनधर्म के मूल तत्वों का प्रचार एवं साधुसंघ में आई हुई शिथिलता को दूर करना था, उस ध्येय में वे कष्टों की परवाह न करते हुए अपने मार्ग पर अडिग रहे। संस्था के नामकरण के बारे में भी उन्होंने कभी नहीं सोचा था, फिर भी संस्था का नाम 'तेरापंथ' हो ही गया, इसका कारण निम्नोक्त घटना है:

जोधपुर में एक बार आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को मानने वाले १३ श्रावक एक दुकान में बैठकर सामायिक कर रहे थे, उधर से वहाँ के तत्कालीन दीवान फतेहसिंह जी सिंधी गुजरे, तो देखा श्रावक यहाँ सामायिक क्यों कर रहे हैं? उन्होंने इसका कारण पूछा, उत्तर में श्रावकों ने बताया श्रीमान् हमारे संत भीखण जी ने स्थानकों को छोड़ दिया है, वे कहते है, एक घर को छोड़कर गाँव-गाँव में स्थानक बनवाना साधुओं के लिये उचित नहीं है, हम भी उनके विचारों से सहमत हैं, इसलिये यहाँ सामायिक कर रहे है। दीवान जी के आग्रह पर उन्होंने सारा विवरण सुनाया, उस समय वहाँ एक सेवक जाति का कवि खड़ा सारी घटना सुन रहा था, उसने तत्काल १३ की संख्या को ध्यान में लेकर एक दोहा कह डाला-

आप आपरौ गिलो करै, ते आप आपरो मंत।
सुणज्यो रे शहर रा लाका, ऐ तेरापंथी संत

बस यही घटना 'तेरापंथ' के नाम का कारण बनी, जब स्वामी जी को इस बात का पता चला कि हमारा नाम 'तेरापंथी' पड़ गया है तो उन्होंने तत्काल आसन छोड़कर भगवान को नमस्कार करते हुए इस शब्द का अर्थ किया--

हे भगवान यह तेरा पंथ है।
हमने तेरा अर्थात् तुम्हारा पंथ स्वीकार किया है, अतः तेरा पंथी है।

आचार्य संत भीखण जी ने सर्वप्रथम साधु संस्था को संगठित करने के लिये एक मर्यादा पत्र लिखा-

(१) सभी साधु-साध्वियाँ एक ही आचार्य की आज्ञा में रहे।
(२) वर्तमान आचार्य ही भावी आचार्य का निर्वाचन करें।
(३) कोई भी साधु अनुशासन का भंग न करें। शेष पृष्ठ १३ पर ...

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी
साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन!

Kamal Doshi
Mob : 9830340967

SHREE SHUBHAM TOYS
48, Ezra Street, 5th floor, Room No 506,
Giria Trade Centre Kolkata - 700 001
Ph: +91 33 4061 9973 Email: arpit_toys@yahoo.in

!! जय तेरापंथ !! !! ॐ अर्हम् !! !! जय भारत !!

जय भिक्षु
(२९९ वॉ जन्म दिवस)
(२६७ वॉ बोधि दिवस)
१९ जुलाई

वर्तमानाचार्य श्री महाश्रमण

तेरापंथ स्थापना दिवस
(२६५ वॉ)
२१ जुलाई

आचार्य भिक्षु जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन्!

Pradeep Chouraria
Mob: 9840019332
AG FILTERS
Manufacturing Industrial Filters
139, Angappa Naicken Street, Chennai,
Tamil Nadu, Bharat-600 001.
Ph: 044-2522 8508
email: agfilters2004@yahoo.co.in
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १२ से ... (४) अनुशासन भंग करने पर संघ से तत्काल बहिष्कृत कर दिया जाए।
(५) कोई भी साधु अलग शिष्य न बनाए।
(६) दीक्षा देने का अधिकार केवल आचार्य को ही हो।
(७) आचार्य जहाँ कहें, वहाँ मुनि विहार या चातुर्मास करें, अपनी इच्छानुसार ना करें।
(८) आचार्य के प्रति निष्ठाभाव रखें, आदि।

इन्हीं मर्यादाओं के आधार पर आज २५९ वर्षों से तेरापंथ श्रमणसंघ अपने संगठन को कायम रखते हुए अपने ग्यारहवें आचार्य श्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में लोककल्याणकारी प्रवृत्तियों में महत्वपूर्ण भाग अदा कर रहा है।

संघव्यवस्था : तेरापंथ संघ में इस समय ६५१ साधु-साध्वियाँ हैं, इनके संचालन का भार वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण पर है, वे ही इनके विहार, चातुर्मास आदि के स्थानों का निर्धारण करते हैं। प्रायः साधु और साध्वियाँ क्रमशः ३-३ व ५-५ के वर्ग रूप में विभक्त किए होते हैं, प्रत्येक वर्ग में आचार्य द्वारा निर्धारित एक अग्रणी होता है, प्रत्येक वर्ग को 'सिंघाड़ा' कहा जाता है।

ये सिंघाड़े पदयात्रा करते हुए भारत के विभिन्न भागों, राजस्थान, पंजाब, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्यभारत, बिहार, बंगाल आदि में अहिंसा आदि का प्रचार करते रहते हैं। वर्ष भर में एक बार माघ शुक्ला सप्तमी को सारा संघ जहाँ आचार्य होते है, वहाँ एकत्रित होते हैं और

प्राकृत भाषा में लेख

आगामी वर्ष भर का कार्यक्रम आचार्य वहीं निर्धारित कर देते हैं और चातुर्मास तक सभी सिंघाड़े अपने-अपने स्थान पर पहुँच जाते हैं।

आचारसंहिता: तेरापंथी जैन साधु जैन सिद्धांतानुसार अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि पाँच महाव्रतों का पालन करते हैं।
(१) उनके उपाश्रय, मठ आदि नहीं होते।
(२) वे किसी भी परिस्थिति में रात्रिभोजन नहीं कर सकते।
(३) वे अपने लिये खरीदे गए या बनाए गए भोजन, पानी व औषध आदि का सेवन नहीं करते। पदयात्रा उनका जीवनव्रत है।

विचार पद्धतिः (१) संसार में सभी प्राणी जीवन चाहते है, मरना कोई नहीं चाहता अतः किसी की हिंसा करना पाप हैं।
(२) मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, अतः उसकी रक्षा **शेष पृष्ठ १४ पर...**

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १३ से ... के लिये अन्य कुछ प्राणियों का वध सामाजिक क्षेत्र में मान्य होने पर भी धार्मिक क्षेत्र में मान्य नहीं हो सकता क्योंकि धर्म मानवतावाद को मानकर नहीं चलता।

(३) धर्म जोर जबरदस्ती में नहीं, हृदय परिवर्तन कर देने में हैं।

(४) धर्म पैसों से नहीं खरीदा जा सकता, वह तो आत्मा की सत्प्रवृत्तियों में स्थित है।

(५) जहाँ हिंसा है, वहाँ धर्म नहीं हो सकता।

(६) धर्म त्याग में है, भोग में नहीं।

(७) हर जाति और हर वर्ग का मनुष्य धर्म करने का अधिकारी है. धर्म में जाति और वर्ग का भेद नहीं होता।

(८) गुणयुक्त पुरुष ही बंदनीय है, केवल वेश नहीं।

(९) धर्म सारे ही कर्तव्य है पर सारे कर्तव्य धर्म नहीं, क्योंकि एक सैनिक के लिये युद्ध करना कर्तव्य हो सकता है पर आध्यात्मिक धर्म नहीं।

दीक्षापद्धतिः दीक्षार्थी उपदेश या अपने जन्म के संस्कारों से प्रेरणा पाकर जब आचार्यश्री के पास दीक्षा की प्रार्थना करता है तो उसके आचरण, ज्ञान, वैराग्य आदि की कठोर परीक्षा ली जाती है, किसी-किसी की परीक्षा में तो पाँच सात वर्ष तक बीत जाते हैं, जो परीक्षा में उत्तीर्ण होता है, उसे ही दीक्षित किया जाता है। दीक्षा हजारों नागरिकों के बीच माता-पिता आदि पारिवारिक जनों की सहर्ष मौखिक और लिखित स्वीकृति, जिसमें कौटुंबिक तथा अन्य कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के हस्ताक्षर हों, के पश्चात् दी जाती है।

तपश्चर्या : तपश्चर्या के क्षेत्र में भी तेरापंथ श्रमण संघ किसी से पीछे नहीं है। एक दिन आहार और एक दिन निराहार, इस प्रकार आजीवन तपश्चर्या करनेवाले तो संघ में अनेक साधु-साध्वियों है।

पाँच, सात, आठ, दिन की तपस्या तो साधारण सी बात मानी जाती है। संघ में ऊंची से ऊंची १०८ दिन की तपस्या हो चुकी है, इन तपस्याओं में केवल पानी के सिवाय और कुछ नहीं लिया जाता है। उबली हुई छाछ (तक्र) का निथरा हुआ पानी पीकर तो चार, छः, नौ महीने (२७२ दिन) तक की तपस्या हो चुकी है।

शिक्षाप्रणालीः तेरापंथ की शिक्षाप्रणाली भी प्राचीन गुरु परंपरा के आधार पर चलती है। सारे संघ में कोई भी वैतनिक पंडित नहीं रहता, स्वयं आचार्य ही सबको अध्ययन कराते हैं और फिर वे शिक्षित साधु-साध्वियों अपने से छोटों को, इसी परंपरा के आधार पर परीक्षाएं होती है, जिनमें व्याकरण, न्याय, दर्शन, कोश, आगम आदि का अध्ययन होता है। शिक्षा के साथ कला का भी विकास हुआ है। साधुचर्या के उपयोगी उपकरण बड़े कलापूर्ण ढंग से संपन्न किए जाते हैं, जिन्हें देखने से ही पता चल सकता है। हस्तलिपि का कौशल भी बहुत समुद्रत है। आज इस मुद्रणप्रधान युग में नौ इंच लंबे व चार इंच चौड़े पन्ने पर ८० हजार अक्षरों को बिना ऐनक के लिखना और वह भी डिग्री की कलम से, सचमुच आश्चर्यजनक घटना है, इसी प्रकार चित्र, धातु रहित प्लास्टिक के ऐनक, दूरवीक्षण मंत्र, आई ग्लास आदि भी बड़े कलापूर्ण ढंग से अपने हाथों से बना लेते हैं।

साहित्यसर्जन

साहित्यसर्जन के बारे में भी तेरापंथ श्रमण संघ अपना स्थान रखता है, विहार क्षेत्र अधिकांश राजस्थान में रहा, इसीलिये आचार्य श्री तुलसी के पहले की रचना राजस्थानी भाषा में हैं। तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भीखण जी ने अपने जीवनकाल में ३८,००० पद्यों की रगना की है

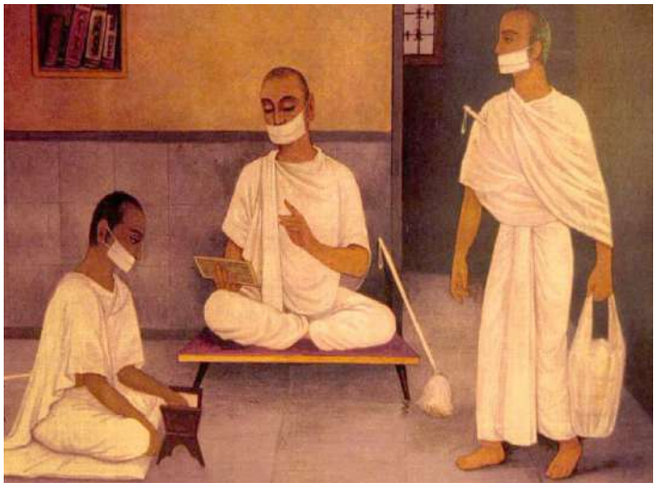

जो आज 'भिक्षु ग्रंथ रत्नाकर' नाम से सुरक्षित है, तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्री जयाचार्य ने भी विपुल साहित्य रचा है, उसका परिमाण लगभग तीन या साढ़े तीन लाख श्लोकों के बीच है, जिसमें सबसे बड़ो उनकी रचना है --भगवतीसूत्र का पद्यमय राजस्थानी भाषा में अनुवाद। इसकी श्लोक रचना करीब ८०,००० है, यह ग्रंथ राजस्थानी भाष का सबसे बड़ा ग्रंथ माना जाता है। तेरापंथ में संस्कृत का विकास अष्टमाचार्य कालुगणों के काल में हुआ, उनके समय में संस्कृत का वृहत् व्याकरण, भिक्षुशब्दानुशासन, लघु व्याकरण, कालकौमुदी व अन्य अनेक काव्यों की रचना हुई, नवम आचार्य श्री तुलसीगणी के काल में संस्कृत के साथ-साथ 'हिंदी' का भी द्रुत गति से विकास हुआ, स्वयं आचार्यश्री ने मिथुन्यायकर्णिका, जैनसिद्धांतदीपिका, कर्तव्यषदिवंशिका आदि ग्रंथों को संस्कृत में रचना की है और उनके शिष्यों ने भी अनेक सुंदर काव्यग्रंथों का निर्माण किया है, कई संतों ने हिंदी जगत् को भी अनेक पुस्तकें दी हैं, जिनमें जैन दर्शन के मौलिक तत्त्व, तेरापंथ का इतिहास, विजययात्रा, आचार्य श्री तुलसी, अहिंसा और उसके विचारक, तेरापंथ, अणुव्रत दर्शन, अणुव्रत, जीवनदर्शन, आचार्य भिक्षु और महात्मा गांधी, दर्शन और विज्ञान, अणु से पूर्ण की ओर आदि है, आजकल आचार्यश्री के सानिध्य में जैनागमों का हिंदी अनुवाद, बृहत् जैनागम शब्दकोश व आगमों के मूग पाठों का संपादन आदि कार्य चल रहे हैं।

तेरापंथ में ११ आचार्यों की गौरवशाली परम्पराः

१ आचार्य श्री भिक्षु जी
२ आचार्य श्री भारीमल जी
३ आचार्य श्री रायचन्द जी
४ आचार्य श्री जीतमल जी
५ आचार्य श्री मघराज जी
६ आचार्य श्री माणकलाल जी
७ आचार्य श्री डालचन्द जी
८ आचार्य श्री कालूराम जी
९ आचार्य श्री तुलसी जी
१० आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी
११ आचार्य श्री महाश्रमण (वर्तमान आचार्य) जी

चातुर्मास के पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन!

Bhanwarlal, Pradeep, Paras, Vinesh, Vishal Doshi

DOSHI TEXTILES
FINE NON-WOVENS INDIA PVT.LTD.

JAIN UDYOG
AADESHWARA NONWOVENS

Paras Doshi Mob: 7331138473

Positions been held in Various Organisations:

- Served as President of Sri Jain Ratna Hiteshi Yuvak Parishad. (Andhra and Telangana)
- Served as President of Sri Jain Ratna Hiteshi Sharvak Sangh. (Andhra and Telangana)
- Served as State Head of Sri Jain Ratna Hiteshi Yuvak Parishad. (Andhra and Telangana)
- Served as State Head of Sri Jain Ratna Hiteshi Sharvak Sangh. (Andhra and Telangana)
- Served as General Secretary Rotary Club of Hyderabad Centennial.
- Served as President Rotary Club of Hyderabad Centennial.
- Served as Secretary of Jain Navyuvak Mandal.Malakpet.
- Served as President of Jain Navyuvak Mandal.Malakpet.
- Served as Area Head of All India Minority Council.
- Served as Secretary of Beawar Youth Club.Hyderabad-Secunderabad.
- Served as President of Beawar Youth Club.Hyderabad-Secunderabad.
- Served as Joint Secretary Sri Vardhaman Sthanakvasi Jain Sharvak Sangh, Greater Hyderabad.
- Served as Joint Secretary Jain Sri Sangh Malakpet.
- Presently as State Head of Sri Jain Ratna Hiteshi Sharvak Sangh. (Andhra and Telangana) (Re-Elected)
- Presently as Secretary of Sri Vardhaman Sthankvasi Jain Shravak Sangh.Hyderabad.
- Presently as Executive Committee Member of Jain Seva Sangh.Hyderabad.
- Presently as Executive Committee Member of Sri Vardhaman Sthanakvasi Jain Sharvak Sangh, Greater Hyderabad.
- Presently as Executive Committee Member of Jain Yuva Parishad. Hyderabad.
- Presently as Executive Committee Member of Samyak Gyan Pracharak Mandal.Jodhpur.
- Presently as Executive Committee Member of Jain Sri Sangh.Malakpet.
- Presently as Director in Board of Rotary Club of Hyderabad Centennial

Kamala Kunj, Plot No: 59, Opp.Bachpan School, Professors Colony, New Malakpet, Hyderabad, Telangana, Bharat- 500036

चातुर्मास पावन पर्व पर
सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन

-: प्रतिष्ठान :-

परस्परोपग्रहो जीवानाम

आर नथमल बैंकर्स
पांडिचेरी

गौतम ज्वैलर्स
पांडिचेरी

वेलकम ज्वैलर्स
पांडिचेरी

ब्रह्मा ज्वैलर्स
पांडिचेरी

जयपारस ज्वैलर्स
पांडिचेरी

ममता बैंकर्स
पांडिचेरी

गौतम चंद जम्बू कुमार सेठी जैन
50, एजिलनगर, मेन रोड, पांडिचेरी- 605003
फोन : 0413-2210608 मो. 09894040069

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु

जय तुलसी

जय महाप्रज्ञ

प्रकाशचन्द्र एस. चपलोत

आचार्य भिक्षु जी के
चरणों में
कोटि-कोटि नमन्!

प्रमिला पी. चपलोत

स्व. श्रीमती सुंदरबाई स्व.श्री सोहनलालजी चपलोत
निवासी : झोर, राजसमंद
पुत्र - पुत्रवधू : राखी - पूरण चपलोत
पुत्री : वंदना प्रकाश चपलोत एवं
समस्त चपलोत परिवार

वंदना ज्वेलर्स:
कोलाबा, कफ परेड, मुंबई - 400005.
फोनः 022-22163848 (M): 9969158565

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

तेरापंथ के संस्थापक

आचार्य भिक्षु

जन्म पर्व १९ जुलाई (तिथिनुसार)

तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्य भिक्षु श्रमण परंपरा के महान संवाहक थे, उनका जन्म वि. स. १७८३ आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को कंटालिया (मारवाड़) में हुआ, पिता का नाम शाह बल्लुजी तथा माता का नाम दीपा बाई था, जाति ओसवाल तथा वंश सकलेचा था। आचार्य भिक्षु का जन्म-नाम भीखण था, प्रारंभ से ही वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे, तत्कालीन परंपरा के अनुसार छोटी उम्र में ही उनका विवाह हो गया, वैवाहिक जीवन से बंध जाने पर भी उनका जीवन वैराग्य भावना से ओतप्रोत था। धार्मिकता उनकी रगरग में रमी थी, पत्नी भी उन्हें धार्मिक विचारों वाली मिली, पति-पत्नी दोनों ही दिक्षा लेने के उद्यत हुए, किंतु नियति को शायद यह मान्य नहीं था, कुछ वर्षों के बाद पत्नी का देहावसान हो गया। भीखणजी अकेले ही दिक्षा लेने को उद्यत हुए, पर माता ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी। तत्कालीन स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्य श्री रघुनाथ जी के समझाने पर माता ने कहा 'महाराज' मैं इसे दीक्षा की अनुमति कैसे दे सकती हूं क्योंकि जब यह गर्भ में था तब मैंने सिंह का स्वप्न देखा था, उस स्वप्न के अनुसार यह बड़ा होकर किसी देश का राजा बनेगा और सिंह जैसी प्रकृति होगी। आचार्य रघुनाथ जी ने कहा बाई यह तो बहुत अच्छी बात है। राजा तो एक देश में पुजा जाता है, तेरा बेटा तो साधु बन कर सारे जगत का पुज्य बनेगा और सिंह की तरह गुंजेगा, इस प्रकार आचार्य रघुनाथ जी के समझाने पर माता ने सहर्ष दिक्षा की अनुमति दे दी। वि.स. १८०८ मार्गशीर्ष कृष्णा बारस को भीखणजी ने आचार्य रघुनाथजी के पास दीक्षा ग्रहण की। संत भीखण जी की दृष्टि पैनी और मेधा सूक्ष्मग्राही थी, तत्व की गहराई में बैठना स्वाभाविक बात थी, थोड़े ही वर्षों में वे जैन शास्त्रों के पारगामी पंडित बन गए।

वि.स.१८१५ के आस-पास संत भीखणजी के मस्तिष्क में साधु वर्ग के आचार-विचार संबन्धी शिथिलता के प्रति एक क्रांति की भावना पैदा हुई, उन्होंने अपने क्रांति पूर्ण विचारों को आचार्य रघुनाथजी के सामने रखा, दो वर्ष तक विचार विमर्श होता रहा, जब कोई संतोषजनक निर्णय नहीं हुआ तब विचार भेद के कारण वि.स. १८१७ चैत्र शुक्ला नवमी को कुछ साधुओं सहित बगड़ी (मारवाड़) में उनसे पृथक हो गये, उनकी धर्म क्रांति का विरोध हुआ, चूंकि उस समय पुज्य रघुनाथ जी का प्रभाव प्रबल था, इसलिए लोगों ने भीखणजी का असहयोग किया, ठहरने के लिए स्थान नहीं दिया, वहां से विहार किया। गांव के बाहर आये कि तेज आंधी आ गई, व्याघ्र स्थिति वाली कहावत घटित हो गई। पीछे गांव में जगह नहीं, आगे आंधी ने रास्ता रोक लिया, इसलिए उन्होंने पहला पड़ाव गांव के बाहर शमशान में जैतसिंहजी की छतरियों में किया, आज भी वे छतरीयां विद्यमान है।

संघ बहिष्कार के साथ ही आचार्य भीक्षु पर जैसे विरोधों के पहाड़ टूट पड़े, पर वे लोह पुरूष थे। विरोधों के सामने झुकना उन्होंने सिखा नहीं था, वे सत्य के महान उपासक थे। सत्य के लिए प्राण न्यौछावर करने के लिए वे तत्पर रहते थे, उन्हीं के मुख से निकले हुए शब्द 'आत्मा राकारज सारस्यां मर पुरा देस्यां', सत्य के प्रति आगद्य संपूर्ण के सुचक हैं। वे महान आत्मबलि थे जीवन में सुध-साधुता को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। वि. स. १८१७ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को केलवा (मेवाड़) में बारह साथियों सहित उन्होंने शास्त्र सम्मत दीक्षा ग्रहण की, यही तेरापंथ स्थापना का प्रथम दिन था, इसी दिन आचार्य भीक्षु के नेतृत्व में एक सुसंगठित साधु संघ का सूत्रपात हुआ जो संघ 'तेरापंथ' के नाम से प्रख्यात है।

वि.स.१८१७ से लेकर वि.स. १८३१ तक पन्द्रह वर्ष का जीवन आचार्य भीक्षु का संघर्षमय रहा, यहां तक कहा जाता है कि उन्हें पांच वर्ष पेट भर आहार ही नहीं मिलता, कभी मिला तो कभी नहीं मिलता, इस महान संघर्ष की स्थति में आचार्य भीक्षु ने कठोर साधना, तपस्या, शास्त्रों का गंभीर अध्यन एवं संघ की भावी रूप रेखा पर चिंतन किया।

वि.स. १८३२ में आचार्य भिक्षु ने अपने प्रमुख शिष्य भारमल जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, उसी समय संघीय मर्यादाओं का भी निर्माण किया गया, उन्होंने पहला मर्यादा पत्र इसी वर्ष मार्ग शीर्ष कृष्णा सप्तमी को लिखा, उसके बाद समय-समय पर नई मर्यादाओं के निर्माण से संघ को सुदृढ करते रहे, उन्होंने अन्तिम मर्यादा पत्र लिखा स. १८५९ की शुक्ला सप्तमी को, एक आचार्य में संघ की शक्ति को केन्द्रित कर उन्होंने सुदृढ संगठन की नीव डाली, इससे अपने-अपने शिष्य बनाने की परंपरा का विच्छेद हो गया। भावी आचार्य के चुनाव का दायित्व भी उन्होंने वर्तमान आचार्य को सौपा। आज तेरापंथ धर्म संघ अनुशासित मर्यादित और व्यवस्थित धर्म संघ है, इसका श्रेय आचार्य भिक्षु कृत इन्हीं मर्यादाओं को जाता है।

आचार्य भिक्षु ने अपने मौलिक चिंतन के आधार पर नये मूल्यों की स्थापना की। हिंसा व दान-दया संबंधी उनकी व्याख्या सर्वथा वैज्ञानिक कही जा सकती है।

आचार्य भिक्षु की अहिंसा सार्वभौमिक क्षमता पर **शेष पृष्ठ १७ पर...**

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी
साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन

Vijaykumar Adesh Munot
Managing Director
Mob: 9989311090/ 8008201090

Vijay Tara
Flexi Packaging Pvt. Ltd.

Manufacturing All Type Of Polythe Bag,
Compstable Biodegrble Bag, Shoping Printed Bag

OFFICE: 6/3/345/1/1 Flat No.501, Riddhi Signature, Road No.1, Banjara Hills Hyderabad, Telangana, Bharat- 500034
(Lane Between Woodland & Puma Showroom Near Gvk One)

FACTORY: Survey No.323, Rangapur Gram Panchayat, Kothur Mandal, R.R. Dist., Telangana, Bharat - 509228.
Phone: 9032014422/11
Email: vijay_munot@rocketmail.com

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी
साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन

Manan Jain
Mob: 8866765894
Lalit Jain
Mob: 9429010903

SHIVRUH™
नारीत्व का आत्मविश्वास
CREATION

1032-34, Jay Mahaveer Textile Market, Near Someshwar Market,
Ring Road, Surat, Gujrat, Bharat-395002
M. : 8866765894, 9429010903

पृष्ठ १६ से ... आधारित थी, बड़ों के लिए छोटों की हिंसा और पंचेन्द्रिय जीवों की सुरक्षा के लिए एकेन्द्रिय प्राणीयों का हनन आचार्य भिक्षु की दृष्टि में आगम सम्मत नहीं था।

अध्यात्म व व्यवहार की भूमिका भी उनकी भिन्न थी, उन्होंने कभी किसी भी प्रसंग पर एक तुला से तोलने का प्रयत्न नहीं किया, उनके अभिमत से व्यवहार व अध्यात्म को सर्वत्र एक कर देना, घी और तम्बाकू के सम्मिश्रण जैसा अनुपादाय था।

दान-दया के विषय में लौकिक एवं लौकतर भेद रेखा प्रस्तुत कर आचार्य भिक्षु ने जैन समाज में प्रचलित मान्यता के समक्ष नया चिंतन प्रस्तुत किया, उस समय समाजिक सम्मान का मापदण्ड दान-दया पर अवलंबित था। सर्वगोपलब्धि और पुण्योपलब्धि की मान्यताएं भी दान-दया के साथ जुड़ी हुई थी। आचार्य ने लौकिक दान-दया की व्यवस्था को कर्तव्य व सहयोग बता कर मौलिक सत्य का उद्घाटन किया। साध्य साधना के विषय में भी उनका दृष्टिकोण स्पष्ट था, उनके अभिनत से सुध साधना के द्वारा ही सुध साध्य की प्राप्ती सम्भव है, उन्होंने कहा रक्त से सना वस्त्र कभी रक्त से शुद्ध नहीं होता, वैसे ही हिंसा प्रधान प्रवृत्ति कभी अध्यात्म के पावन लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकती।

आचार्य भिक्षु एक कुशल विधिवक्ता होने के साथ-साथ एक सहज कवि और महान साहित्यकार भी थे। आचार्य भिक्षु की साहित्य रचना का प्रमुख विषय सुध आचार का प्रतिपादन, तत्व दर्शन का विश्लेषण एवं धर्म संघ की मौलिक मर्यादाओं का निरूपण था, उनकी रचनाओं में प्राचीन वैराग्य में आख्यान भी निसद्ध था। आचार्य भिक्षु ने कभी कवि बनने का प्रयत्न नहीं किया और न कभी उन्होंने भाषा शास्त्र, छंद शास्त्र, अलंकार शास्त्र एवं रस शास्त्र का प्रशिक्षण प्राप्त किया पर उनके द्वारा रचे गये पदयों में रस, अनुप्रयास और अलंकारों के प्रयोग पाठक को मुग्ध कर देते हैं। आचार्य भिक्षु के साहित्य को पढ़ कर आधुनिक विद्वान उन्हें हिगल ओर काण्ट की तुला से बोलते हैं।

आचार्य भिक्षु जब तक जिए, ज्योर्तिमय बनकर जिए, उनके जीवन का हर पृष्ठ पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है।

आचार्य भिक्षु के शासन काल में ४९ साधु और ५६ साध्वियां दीक्षित हुई। वि.स. १८६० भाद्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन सिरियारी (मारवाड़) में उन्होंने समाधि मरण प्राप्त किया, उस समय उनकी आयु ७७ वर्ष की थी।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा वर्ष २०२४ हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

मुनि कमलकुमारजी	: डोम्बिवली, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत
साध्वी प्रेमलताजी	: हिसार, हरियाणा, भारत
साध्वी उज्जवलप्रभाजी	: औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत
मुनि आलोक कुमारजी	: पूना, महाराष्ट्र, भारत
मुनि पुलकित कुमारजी	: बीड, महाराष्ट्र, भारत
साध्वी विद्यावतीजी द्वितीय	: दादर, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में आचार्यश्री रवीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की गुणानुवाद सभा सम्पन्न

राजगढ़ / धार: श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. पेढ़ी (ट्रस्ट) श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के तत्वाधान में अर्हत् ध्यानयोगी गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय रवीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का ८ वां पुण्यदिवस गुणानुवाद सभा के साथ भावांजलि अर्पित करके मनाया गया।

दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पाट परम्परा के सप्तम पट्टधर अर्हत् ध्यानयोगी गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय रवीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का ८वां पुण्यदिवस गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय हितेशचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. एवं साध्वी श्री सद्गुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विमलयशाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री रश्मिरेखाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री हर्षवर्धनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री किर्तीवर्धनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में गुणानुवाद सभा हुई। गुणानुवाद सभा में तीर्थ के मैनेजिंग ट्रस्टी सुजानमल सेठ, ट्रस्टी मांगीलाल पावेचा व साधार्मिक भक्ति के लाभार्थी मनीष प्रकाशचंदजी, तीर्थ के महाप्रबंधक अर्जुनप्रसाद मेहता, सहप्रबंधक प्रीतेश जैन, अरविंद जैन युवा सहयोगी सहित राजगढ़ नगर के कई वरिष्ठ समाजसेवियों ने आचार्य रवीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के चित्र पर माल्यार्पण कर धूप, दीप प्रज्वलित कर भावांजलि अर्पित की, साथ ही आचार्यश्री रवीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के समाधि मंदिर में भी धूप, दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण करके पुष्पांजलि अर्पित की गई। आचार्यश्री के समाधि मंदिर पुष्प सज्जा से सजाया गया। गुणानुवाद सभा में तीर्थ के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री सेठ ने भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्यश्री बहुत ही सरल और सहज स्वभाव के थे, वे सिर्फ अपनी ध्यान साधना में हमेशा लिप्त रहते थे। श्री सुजानमल जी ने कहा कि १९ जुलाई को आत्मिक चातुर्मास हेतु श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में मुनि भगवन्त व साध्वी भगवन्त का प्रवेश होगा और २० जुलाई से चातुर्मास प्रारम्भ होगा, अधिक से अधिक संख्या में आराधक अपनी आत्मा को शुद्ध करने के उद्देश्य से इस चातुर्मास में जुड़कर अपनी आत्मा का कल्याण करें व पुण्योपार्जन करें। गुणानुवाद सभा के पश्चात् स्वामीवात्सल्य का लाभ परम गुरुभक्त मनीष प्रकाशचन्दजी परिवार द्वारा लिया गया। दोपहर में गायों को गौशाला में हरी घास व गुड़ लापसी परोसी गई।

फ्लेयर पेन को मिला टॉप 'एक्सपोर्ट एक्सिलेन्स अवार्ड'

मुंबई: दी प्लास्टिक एक्सपोर्ट प्रमोशन कॉउन्सिल द्वारा देश की अग्रणी पेन निर्माता कंपनी को टॉप 'एक्सपोर्ट एक्सिलेन्स अवार्ड' २०२१-२२ एवं २०२२-२३ से सम्मानित किया गया, यह अवार्ड कंपनी के चैयरमेन खुबिलाल राठौड़ एवं डायरेक्टर विमलचंद राठौड़ को महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम रमेश बैंस के हाथों नेस्को गोरेगांव में आयोजित भव्य कार्यक्रम में दिया गया। फ्लेयर देश की सबसे ज्यादा २०२१-२२ और २०२२-२३ लेखन उपकरण निर्यात करनेवाली कंपनी हैं। विश्व के करीबन ९० से अधिक देशों में कंपनी १९८० से निर्यात कर रही हैं। लंबे समय से यह कंपनी उच्चतम निर्यात करनेवाली कंपनी हैं। ज्ञात रहे कि 'फ्लेयर' समुह हाल ही में शेयर बाजार में लिस्टेड हुई है।

किसी भी प्रोडक्ट की क्वालिटी यानी गुणवत्ता के प्रति उत्पादक का कमिटमेंट बेहद जरूरी है। फ्लेयर भी अपनी गुणवत्ता को लेकर पहले दिन से ही समर्पित रहा है। क्वालिटी के प्रति इसी समर्पण के लिए फ्लेयर को कई अवॉर्ड भी मिले हैं। फ्लेयर के सभी उत्पाद क्वालिटी कन्ट्रोल के उच्च मानदंडों के तहत निर्मित होते हैं।

आध्यात्मिक तथा सामाजिक जागरण के लिए डॉ. मंजू लोढ़ा का सम्मान

मुंबई: देश की जानी मानी सामाजिक संस्था लोढ़ा फाउंडेशन की चेयरमैन डॉ मंजू मंगलप्रभात लोढ़ा, उत्कृष्ट समाजसेवी के साथ-साथ वरिष्ठ साहित्यकार तथा फेसबुक और यूट्यूब के माध्यम से समाज को निरंतर जगाने का काम भी करती रहती हैं। उनके आध्यात्मिक जागरण संदेश को देखते हुए नवकार वर्ल्ड रिकॉर्ड के माध्यम से उन्हें सम्मानित किया गया। जैन विनायक अशोक लुनिया तथा अंतरराष्ट्रीय मामलों के सचिव आदित्य नारायण बनर्जी द्वारा उन्हें सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। सोशल मीडिया पर डॉ मंजू लोढ़ा द्वारा नियमित रूप से प्रस्तुत की जाने वाली, सुवचन– मंजूबेन लोढ़ा और सार्थक जीवन की भारत के साथ-साथ विदेशों में भी सराहना की जाती है। अध्यात्म तथा नैतिकता से जुड़ी उनकी बातों को दुनिया का एक बड़ा वर्ग पसंद करता है, इन तमाम महत्वपूर्ण सेवाओं को देखते हुए उनका सम्मान किया गया है।

नवनिर्मित तेरापंथ भवन का उद्घाटन समारोह

मुर्शिदाबाद: समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञाजी, समणी शुभप्रज्ञाजी एवं समणी मननप्रज्ञा जी के सान्निध्य में नवनिर्मित तेरापंथ भवन, मुर्शिदाबाद का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। समणी मधुरप्रज्ञाजी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा 'मुर्शिदाबाद' क्षेत्र के सभी लोगों के मन में बड़ा उत्साह और उल्लास दिखाई दे रहा है, यह उत्साह है अपने घर में आने का है। घर दो प्रकार का होता है - एक है भौतिक घर, दूसरा आध्यात्मिक घर।

'बरहमपुर' का यह नवनिर्मित भौतिक भवन आध्यात्मिक पथ का सोपान बनेगा। प्रवृत्ति और निवृत्ति दो शब्द आते हैं, जिन्दगी भर व्यक्ति प्रवृत्ति करता रहता है, किन्तु हमें प्रवृत्ति से हटकर कुछ समय निवृत्ति का जीवन भी जीना चाहिए। निवृत्ति में आने वाला व्यक्ति अध्यात्म पथ पर बढ़ सकता है। निवृत्ति का अर्थ है- अवकाश। मन पर विचारों का कंट्रोल करना, मन- वचन काया को संयमित करना ही अवकाश है। केवल बड़ा भव्य भवन बनाने से इसकी उपयोगिता साबित नहीं होगी, इस भवन में आकर आध्यात्मिक अनुष्ठान चले तो वास्तव में इसमें सभी उपयोगिता साबित होगी।

समणीजी ने आगे कहा कि महासभा द्वारा चलाए गए अभियान, महिला मंडल एवं तेयुप के कार्यक्रम इस भवन में निरन्तर चले तो इस भवन की सार्थकता है। उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में हीरालाल मालू, यशकरण मालू एवं धर्मेंद्र चोरड़िया की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में उपासक प्रकाश गिरिया, तेजकरण बोथरा, अभातेयुप के संभाग प्रमुख (शेष बंगाल) सुमित छाजेड़ एवं अभातेममं की सदस्या भी उपस्थित रहीं।

हाय, हैलो छोड़िये,
जय जिनेन्द्र बोलिए!

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९
www.samratjewellers.com

Ideal place for
Marriages, Conferences
& Relaxation
Khanvel RESORT
SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

रिश्ते निभाने के लिये बुद्धि की नहीं भावों की शुद्धि होनी चाहिये

-आचार्य १०८ श्री प्रसन्नसागरजी महाराज

आगापुरा: वात्सल्य दिवाकर पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता आचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज के परम प्रभावक सुशिष्य साधना महोदधि अंतर्मना आचार्य १०८ श्री प्रसन्नसागरजी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय १०८ श्री पीयूष सागरजी महाराज का चतुर्विध संघ के साथ श्री १००८ चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर आगापुरा में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रवचन मे कहा कि रिश्ते निभाने के लिये बुद्धि की नहीं भावों की शुद्धि होनी चाहिये..! सत्य कहो, स्पष्ट कहो, सम्मुख कहो जो अपना होगा, वो समझ जायेगा और जो पराया होगा, वो छूट जायेगा। इसलिए मौका सबको मिलता है, वक्त सबका आता है - कोई चाल चल जाता है, तो कोई बर्दाश्त कर जाता है।

यदि वाणी, व्यवहार से किसी को नीचा दिखाने की कु-चेष्ठा करते हैं, तो मानकर चलना कि हमें स्वयं को भी नीचा देखना पड़ सकता है। जैसे दूसरे के मुख को काला करने के लिये पहले स्वयं के हाथ को काला करना पड़ता है, या दूसरे को गाली देने से पहले, स्वयं के मन को गन्दा करना पड़ता है या दूसरों को गड्ढे में डालने से पहले, स्वयं को गड्ढे में उतरना पड़ता है। वैसे ही व्यक्ति का -- स्वयं का कर्म, स्वयं पर ही लौटकर आता है इसलिए दूसरों की लकीर को तुम स्वयं कभी मत मिटाओ बल्कि अपनी लकीर को इतना बड़ा कर दो कि सामने वाले को उसे मिटाने में तारे जमीं पर दिख जाये। अन्यथा दूसरों की खींची हुई लकीर को मिटाकर, अपनी लकीर को बड़ा करना मूर्खता और पागलपन के ही लक्ष्ण है।

हम किसी की कीर्ति, ख्याति, प्रशंसा, गुणों को देखकर या वैभव और बढ़ोतरी देखकर ईर्ष्या, द्वेष से ना जले अपितु ईश्वर की मर्जी मान कर सहज स्वीकार कर लें...

-नरेंद्र अजमेरा
पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705, INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

पत्रकार एम.सी. जैन की साहित्य कृति 'अंतिम उपदेश एवं आदेश'

चिकलठाणा (महा.): सुविख्यात समाजसेवी मराठी हिंदी लेखक ८५ वर्षीय 'सूखनेचा तीरावर', 'आध्यात्म प्रकाश' तथा अंतिम उद्देश्य एवं आदेश' पुस्तक लिखकर एक उज्जवलमय कीर्तिमान स्थापित किया है। २ जुलाई २०२४ को पत्रकार एम.सी. जैन तथा हेमलता जी के विवाह को ६० वर्ष पूर्ण हुए हैं, इस उपलक्ष में भारत गौरव राष्ट्रसंत आचार्य मुनि गुप्तीनंदी जी के सानिध्य में 'अंतिम उपदेश एवं आदेश' पुस्तक का प्रकाशन समारोह अतिशय क्षेत्र धर्म तीर्थ में संपन्न हुआ। आचार्य गुप्तीनंदी जी ने कहा कि ८५ वर्ष के उम्र में साहित्य निर्माण करना अत्यंत कठिन काम है। एम.सी. जैन समाज के वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यिकार हैं, उनकी साहित्यिक सेवा आगे अनेक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती रहेगी। इस अवसर पर संघस्थ आर्यिका आस्थाश्री माताजी, क्षुल्लक शांतिगुप्त जी, सौ. हेमलता जी, दिनेश सेठ सौ. मंजूषा, प्रतीक पटनी व भाविक उपस्थित थे।

पर्यावरण के साथ साथ नई नई तकनीक सीखना भी समय की मांग है- शोभाताई आर धारीवाल

पुणे: विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए, अपने रीति-रिवाजों और नैतिक मूल्यों को सदैव बनाए रखना चाहिए तथा किसी भी प्रकार का व्यसन नहीं करना चाहिए, इसके बजाय प्रकृति प्रेमी बनें, आज विद्यार्थी अवस्था में भी बहुत से बच्चे नशे के आदी होते जा रहे हैं और शिक्षकों, अभिभावकों तथा समाज के प्रत्येक तत्व को इस ओर ध्यान देना आवश्यक है, आरएमडी फाउंडेशन की उपाध्यक्ष श्रीमती शोभाताई आर धारीवाल द्वारा उक्त विचार श्री रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल इंग्लिश स्कूल कोंढवा में विज्ञान एवं वाणिज्य शाखा में १०वीं एवं १२वीं मेरिट श्रेणी में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के दौरान व्यक्त किये।

हर साल की तरह इस साल भी आरएमडी इंग्लिश स्कूल के विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में आने का क्रम बरकरार रखा है।

इस मौके पर उन्होंने छात्रों से दुनिया की नई तकनीकों को सीखने और आत्मसात करने की भी अपील की। आरएमडी फाउंडेशन द्वारा इस स्कूल को दिए गए स्मार्ट पैनल बोर्ड और आधुनिक कंप्यूटर लैब का उद्घाटन शोभाताई आर धारीवाल ने किया।

२००१ में एक छोटे से कमरे में २ छात्रों के साथ शुरू हुए इस स्कूल में आज नर्सरी से १२वीं तक विज्ञान और वाणिज्य स्ट्रीम में १६५० छात्र हैं। आरएमडी फाउंडेशन की ओर से मेधावी विद्यार्थियों और स्कूल के सभी शिक्षकों और कर्मचारियों को बर्डस फूड नेस्ट उपहार में दिए गए, इसके बाद उपस्थित लोगों द्वारा विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया, इस अवसर पर संस्थान के ट्रस्टी पोपटशेठ ओस्तवाल, ललित ओस्तवाल एवं संस्थान के अन्य सभी ट्रस्टी, विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती स्वाति बाहुलेकर, उप-प्राचार्य श्रीमती संध्या नादगौड़ा, श्री ज्ञानेश्वर देशमुख, स्कूल के शिक्षण कर्मचारी और गैर-शिक्षण कर्मचारी, छात्र और अभिभावक उपस्थित थे।

!! ॐ अर्हम् !!

जय भिक्षु जय महाप्रज्ञ जय तुलसी

चातुर्मास के पावन पर्व पर
सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन

Raichand Choraria Jain
Mob. 09962584570
Mahendar Choraria Jain
Mob. 09841184570
Kamal Choraria Jain
Mob. 09841644570

Kiran Wire Netting Co.

96(Old No.58) Rasappa Chetty Street
Chennai, Tamilnadu, Bharat-600003
Ph.: 044 25353397/04425350986
E-mail: kwncom@gmail.com

।। ॐ अर्हम् ।। ।।श्री गुरूवेनमः ।।
आचार्य भिक्षु आचार्य महाश्रमण

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी
साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन

स्व. झमकलाल ताराचंद भंडारी जैन
स्व. कमलाबाई झमकलाल भंडारी
अशोक कुमार, दिलीप कुमार, प्रकाशचंद्र, विनोद कुमार,
एवम् कमल कुमार भंडारी परिवार झबुआ

३६, पेटलावद, झबुआ, मध्यप्रदेश, भारत- ४५७७७३
भ्रमणध्वनि: ९१७९७१८५६७

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

कानपुर विश्वविद्यालय में जैन शोध पीठ की होगी स्थापना
छात्रों को छात्रवृत्ति के माध्यम से प्रोत्साहित भी किया जाएगा

कानपुरः उत्तर प्रदेश में कानपुर के छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय में देश का पहला जैन धर्म शोधपीठ केंद्र खुला है। कानपुर विश्वविद्यालय देश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है, जहां जैन धर्म का शोधपीठ खोला गया है, यहां विश्वविद्यालय में देश भर के छात्र छात्राएं जो जैन धर्म के बारे में जानना या पढ़ना चाहते है, वह आकर यहां विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर सकेंगे, इसे आचार्य विद्यासागर जी, सुधा सागर जी जैन शोध पीठ नाम दिया गया है, जानें यहां कौन-कौन से कोर्स छात्र-छात्राएं कर सकते हैं:

यह कोर्स कर सकेंगे छात्र-छात्राएं

इस शोध पीठ की स्थापना के बाद अब विश्वविद्यालय में जैन धर्म से जुड़े कई कोर्स शुरू किए जाएंगे जो ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मीडियम से किया जा सकता है, इसके अलावा कई ऑनलाइन डिग्री कोर्स भी शुरू किए जा रहे हैं, साथ ही जैन गणित, जैन इतिहास और खगोल शास्त्र जैसे कोर्स की शुरुआत भी की जा रही है।

विश्वविद्यालय में सर्टिफिकेट कोर्स भी होगा शुरू

जहां विश्वविद्यालय में तीन सर्टिफिकेट कोर्स जैन धर्म से जुड़े हुए शुरू किए जा रहे हैं, इसके साथ ही जो छात्र-छात्राएं जैन धर्म पर शोध करना चाहते हैं, उसके लिए भी विश्वविद्यालय में खास तैयारी की गई है, जैन धर्म पर शोध करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा पीएचडी की दो सीट भी आरक्षित की गई है, इन सीटों पर छात्र विश्वविद्यालय में जैन धर्म पर शोध भी कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति ने बताया

कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सुधीर अवस्थी ने बताया कि कानपुर विश्वविद्यालय देश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है, जहां जैन शोधपीठ की स्थापना की गई है, इसकी स्थापना के पीछे उद्देश्य यह है कि जैन धर्म से जुड़ी जानकारी और इतिहास और चीजों के बारे में लोग जान सकें। शुरुआत में ३०० सीटों पर यहां पर दाखिला शुरू होने जा रहा है, प्रवेश प्रक्रिया अगले महीने से शुरू हो जाएगी।

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी
साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन

M/s Sampat Lal Daga
Mine Owner

Best Quality Ball Clay, Highly Plastic Clay,
Mudh Clay, Bikaner Clay, Engope Clay,
Silica Sand, Red and Yellow Ochers etc.

Rohit Daga Jain Mohit Daga Jain
Mob. 09829218779

1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner, Rajasthan, Bharat-334001

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

आचार्य मुनिश्री कुशाग्रनंदी जी का वर्षायोग औरंगाबाद संभाजीनगर में

चिकलठाणा (महाराष्ट्र): सुविख्यात दिगम्बर जैन मुनि आयुर्वेदाचार्य आचार्य कुशाग्रनंदी जी का मुंबई से विहार हो गया है, १८ जून को वे शिरडी संभाग में थे, ७ जुलाई तक धर्मनगरी औरंगाबाद-संभाजीनगर में पधारें, उनके स्वागत की तैयारियां हुई है, २१ जुलाई को शांतिनाथ अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य कुशाग्र नंदी जी के सानिध्य में वर्षायोग में स्थापना होगी।

- एम.सी. जैन

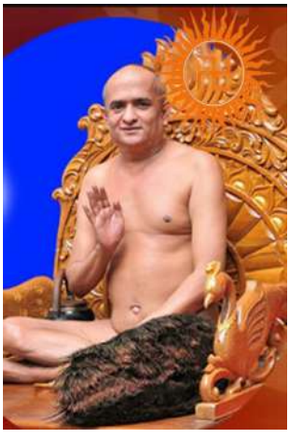

जैनाचार्य विरागसागर महाराज साहेब का संलेखना पूर्वक हुआ समाधिमरण जैन समाज में शोक की लहर

जालना (महा.): दिगम्बराचार्य विरागसागर जी महाराज का जालना (महा.) के पास में ०४ जुलाई की मध्य रात्रि को संलेखना पूर्वक समाधिमरण हो गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बुंदेलखंड के प्रथम दिगम्बराचार्य विरागसागर महाराज का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिले में ग्राम पथरिया में ०२ मई १९६३ में श्रावक श्रेष्ठी कपूरचंद श्यामा देवी जैन के परिवार में हुआ था। आपका गृहस्थ अवस्था का नाम अरविंद जैन था। आपकी क्षुल्लक दीक्षा ०२ फरवरी १९८० को वुढार जिला शहढोल में आचार्य श्री सन्मति सागर महाराज के करकमलों द्वारा हुई थी। आपको मुनि दीक्षा ०९ दिसंबर १९८६ को महाराष्ट्र के औरंगाबाद में आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के द्वारा प्रदान की गई।

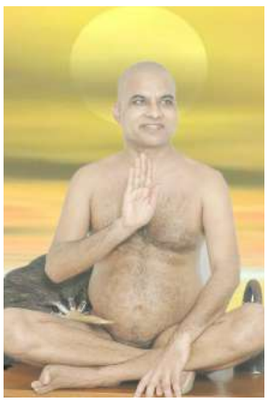

सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार आचार्य श्री का २०२४ का पावन वर्षायोग महाराष्ट्र के जालना में होना था, जिसके लिए वे अपने शिष्यों के साथ पद विहार कर रहे थे। ०२ जुलाई को महाराष्ट्र के जालना के नजदीक देवभूति के ग्राम सिदखेड़ा में पदबिहार करते समय अचानक विराग सागर महाराज का स्वास्थ्य खराब हो गया, उन्होंने तुरंत संलेखना समाधि ग्रहण की और ०४ जुलाई की मध्य रात्रि को ०२.३० बजे इस नश्वर शरीर को त्यागकर देवलोक को गमन किया, उनकी समाधि की खबर सुनते ही जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गई, अंतिम संस्कार के समय दर्शनों के लिए जनसैलाब उमड़ पड़ा, हजारों की संख्या में लोग उनके अंतिम दर्शनों के लिए पहुंचे।

आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने अपने संयमी जीवनकाल में ३५० से अधिक दीक्षाएं प्रदान की। आपके दीक्षित मुनि, आर्यिकाएं पूरे विश्व में अहिंसा, शाकाहार और जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार कर रहे हैं, आपने अनेकों पुस्तकों का लेखन किया, साथ ही अनेकों शास्त्रों की टीकाएं लिखी। आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज मुरैना की जैन समाज से विशेष स्नेह रखते थे। आपका अनेकों बार मुरैना में आगमन हुआ। पूज्य गुरुदेव मुरैना को अपनी साधना स्थली कहा करते थे। पूज्य गुरुदेव के समाधिमरण से उनके भक्तों में शोक व्याप्त है।

जैन तीर्थों की सुरक्षा में हरसंभव सहयोग देंगे

- मंगल प्रभात लोढा, पालक मंत्री, महाराष्ट्र राज्य

मुंबई: गुजरात के 'पावागढ़' में कुछ उपद्रवियों ने जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों को तोड़ दिया था, इसके विरोध में दक्षिण मुंबई जैन संघ के सदस्यों के साथ जैन तीर्थों की सुरक्षा के लिए आयोजित बैठक में कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा शामिल हुए।

बैठक में मंत्री लोढ़ा ने कहा कि इस घटना से पूरा जैन समाज व्यथित है और दोषियों को सजा मिलनी चाहिए, जैन तीर्थों की सुरक्षा के लिए हम हरसंभव सहयोग करेंगे। पावागढ़ तीर्थ में संप्रति महाराज के समय की मूर्तियों को खंडित कर कूड़े में फेंक दिया गया है, इस कृत्य से पूरे भारत में जैन समुदाय की भावनाएं आहत हुई हैं और पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई गई है, इस संबंध में तत्काल कार्रवाई को लेकर जैन समुदाय के हजारों नागरिक सूरत कलेक्टर कार्यालय के बाहर शांतिपूर्वक विरोध प्रदर्शन किया।

चातुर्मास पावन पर्व पर
सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन
विनोद कुमार जैन
महामंत्री श्री दिगम्बर जैन महासभा पश्चिमी दिल्ली
मो. 9810822840
श्रीमती शकुंतला जैन
मो. 9810822844
के.84.बाल उद्यान मार्ग, उत्तम नगर, नई दिल्ली, भारत-110059

चातुर्मास के पावन पर्व पर सभी
साधु-साध्वियों के पावन चरणों में
कोटि-कोटि नमन
Jineshwar Dayal Jain
अध्यक्ष - त्रिकाल चौबीसी मंदिर शिखरजी
अध्यक्ष - २४ समवशरण सोनागिरी मध्य प्रदेश
Mob: 98100 82889
KK-145 kavinagar, Ghaziabad,
Uttar Pradesh, Bharat- 201002

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

चातुर्मास - 2024 भाग - 1

तपागच्छाधिपति आचार्य श्री मनोहरकीर्ति सागर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 7-7-2024
श्री लक्ष्मीवर्धक जैन संघ
शांतिवन, पालड़ी
अहमदाबाद - 380007
गुजरात

गच्छाधिपति आचार्य श्री जयानंद सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 12-7-2024
श्री राजस्थान जैन संघ,
बाजार पेठ,
कल्याण (वेस्ट),
जिला- ठाणे - 421301

गच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेव सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 14-7-2024
श्री मंडार जैन संघ,
मंडार,
जिला - सिरोही - 307513
राजस्थान

गच्छाधिपति आचार्य श्री नित्यानंद सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 17-7-2024
श्री आतम वल्लभ जैन पंजाबी धर्मशाला
तलहेटी रोड
पालीताना- 364270
जिला भाव नगर, गुजरात

गच्छाधिपति आचार्य श्री धर्मधुरंधर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 15-7-2024
श्री विजय इन्द्रदिन्न कम्युनिटी सेंटर,
समुद्र नगर (सुन्दर नगर),
लुधियाना - 141008 (पंजाब)
श्री आत्मानंद जैन सभा (रजि.)

गच्छाधिपति आचार्य श्री नित्यसेन सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 7-7-2024
श्री जयन्तसेन जैन शासन प्रभावक
ट्रस्ट- पेपराल तीर्थ,
बनासकांठा (उ.गु.)- 385310

गच्छाधिपति आचार्य श्री हितेशचन्द्र सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 15-7-2024
श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय
त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
श्री राजेन्द्रसूरि क्रिया भवन, जूना बस स्टैंड
पो. आहोर, जिला जालोर, राज- 307029

गच्छाधिपति आचार्य श्री मुक्तिप्रभ सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 13-7-2024
श्री शंखेश्वरपुरम् पार्श्वनाथ जैन श्वे. तीर्थ
पुरुलिया-बराकर मैन रोड,
मु. शंखेश्वरपुरम, पो. सांकड़ा, थाना-पाडा,
स्टे. अनाडा, जिला. पुरुलिया (प.बं.)

गच्छाधिपति आचार्य श्री कुलचंद्र सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 10-7-2024
श्री गौतम नगर जैन संघ,
देव हॉस्पिटल गली,
वासणा, अहमदाबाद - 380007
(गुजरात).

आचार्य श्री महाश्रमण महाराज
प्रवेशः 15-7-2024
भगवान महावीर कॉलेज,
वीआईपी - 2 अल्थान,
वेसु, सूरत - 395017
श्याम मंदिर के पास

आचार्य श्री शिवमुनिजी महाराज
प्रवेशः 15-7-2024
आत्म भवन, 416-417, अवध शंगरीला,
लब्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम के सामने,
मुम्बई अहमदाबाद हाईवे,
बलेश्वर - 394317, जिला-सूरत (गुज.)

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज
प्रवेश 15-7-2024
श्री दिगम्बर जैन तीर्थ
पोस्ट-पुष्पगिरी, सोनकच्छ,
जिला-देवास, मध्यप्रदेश- 455118

आचार्य श्री पद्मसागर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 14-7-2024
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा सर्कल के पास, गांधीनगर,
अहमदाबाद रोड, गांधीनगर-382426

आचार्य श्री यशोवर्म सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 12-7-2024
श्री गिरधर नगर जैन संघ
शाहीबाग,
अमदाबाद - 380004

आचार्य श्री रत्नसुंदर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 7-7-2024
श्री शीतलनाथ भगवान जैन संस्थान,
जी बी नगर, मालेगांव रोड,
धुले - 424001 (महाराष्ट्र)

आचार्य श्री रत्नसेन सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 17-7-2024
श्री पोसालिया जैन संघ
मु.पो. पोसालिया, तह-शिवगंज,
स्टे. जवाईबांध,
जि. सिरोही - 307028

आचार्य श्री अरुणोदय सागर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 19-7-2024
आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि धर्म उद्यान
प्रेरणाधाम, लालगेबी आश्रम,
गिरनार, तलेटी, जुनागढ़ -362001
गुजरात

राष्ट्रसंत श्री नम्र मुनि महाराज
प्रवेशः 20-7-2024
परमधाम आश्रम वल्कास
पड्घा के पास, वल्कास विलेज,
ता. कल्याण, ठाणे - 421601
महाराष्ट्र

आचार्य श्री रविशेखर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 17-7-2024
श्री पुनमिया गच्छ जैन उपाश्रय,
आहोर, मेनबझार,
जिला जालोर - 307029
राजस्थान

आचार्य श्री यशोविजय सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 7-7-2024
श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय,
नवरोजी लेन, घाटकोपर (वेस्ट),
मुंबई - 400086

आचार्य श्री मुनिचंद्र सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 6-7-2024
श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे. मु. संघ,,
भाजी गली, घाटकोपर (वेस्ट),
मुंबई - 400086

आचार्य श्री जयानंद सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 17-7-2024
श्री आत्म वल्लभ जैन पंजाबी धर्मशाला
तलहेटी रोड
पालीताना- 364270
जिला भाव नगर, गुजरात

आचार्य श्री प्रभाकर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 15-7-2024
श्री धरणेन्द्र पार्श्वनाथ जैन संघ
धरणेन्द्र चौक, ताड़वाडी,पाल के पास
पटेल पार्क के पास, पाल के पास,
सूरत - 395005, गुजरात

आचार्य श्री जिनोत्तम सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 19-7-2024
श्री आदेश्वर ओसवाल जैन मंदिर पेढ़ी
महावीर स्मृती कुंज, नगर पालिका
के पीछे, शिवगंज,
जि. सिरोही - 307027, राजस्थान

आचार्य श्री चंद्रानन सागर सूरिश्वरजी महाराज
प्रवेशः 19-7-2024
श्री नाकोड़ा तीर्थ
मेवानगर,
जिला - बाडमेर - 344025

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत सरकार द्वारा पंजीकृत अंतर्राष्ट्रीय संस्थान
एक ही आव्हान
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं
आप भी यदि 'भारत नाम सम्मान' अभियान से जुड़ना चाहते हैं तो कृपया संपर्क करें - 9322307908

चातुर्मास - 2024 भाग - 2

आचार्य श्री सागरचंद्र सागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 19-7-2024 श्री वर्धमान आगम मंदिर संस्था तलेटी नगर, पालीताणा भावनगर (गुजरात) - 364270	आचार्य श्री पीयूषभद्र सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 7-7-2024 श्री थरा जैन संघ, थरा, तालुका - कांकरेज, जिला - बनासकांठा - 385560 (गुजरात)	आचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: -07-2024 श्री लाल जैन श्वेतांबर मंदिर श्री जैन श्वेतांबर संघ सेक्टर नंबर 4, जवाहर नगर, जयपुर - 302004, राजस्थान	आचार्य श्री आनंदवर्धन सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 17-7-2024 सुणतर भवन धर्मशाला हस्तगिरी रोड, मेवाड धर्मशाला के पास, तलेटी, पालीताणा - 364270, गुजरात	आचार्य श्री कीर्तिचंद्र सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 7-7-2024 श्री विमलनाथ जैन मंदिर आराधना भवन, बालोतरा - पचपत्र, बारमेर - 344022 राजस्थान
आचार्य श्री दिव्येशचंद्र सागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 07-07-2024 श्री भाग्यवर्धक चीकुवाड़ी जैन संघ, बोरीवली (वेस्ट), मुंबई - 400 092	आचार्य श्री भाग्ययश सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 12-7-2024 श्री गिरधर नगर जैन संघ शाहीबाग, अमदाबाद - 380004	आचार्य श्री महेन्द्रसागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 14-7-2024 श्री चंद्रप्रभस्वामी जैन संघ शांतावाडी, पांडु पाटील लेन, जे.पी.रोड, अंधेरी (प.), मुंबई - 400058	आचार्य श्री नरेन्द्र सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 19-7-2024 जैन उपाश्रय, पो. झूंठ, ता. ब्यावर, जिला - अजमेर - 305901 राजस्थान	आचार्य श्री उदयकीर्ति सागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 7-7-2024 श्री लक्ष्मीवर्धक जैन संघ शांतिवन, पालड़ी अहमदाबाद - 380007 गुजरात
आचार्य श्री आत्मदर्शन सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 17-7-2024 सुणतर भवन धर्मशाला हस्तगिरी रोड, मेवाड धर्मशाला के पास, तलेटी, पालीताणा - 364270, गुजरात	आचार्य श्री अरुणप्रभ सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 14-7-2024 श्री जैन संघ आराधना भवन मैन बाजार खुडाला, स्टेशन फालना, जिला - पाली, राजस्थान - 306116	आचार्य श्री प्रदीपचंद्र सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 14-7-2024 श्रीपाल नगर जैन देरासर 12 तीन बत्ती, हर्कनेक रोड, मलाबर हिल, मुंबई - 400006	आचार्य श्री विदानंद सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 17-7-2024 श्री आत्म वल्लभ जैन पंजाबी धर्मशाला तलहेटी रोड पालीताना- 364270 जिला - भाव नगर, गुजरात	आचार्य श्री जयरत्न सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 17-7-2024 श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट श्री वर्धमान राजेन्द्र जैन भाग्योदय ट्रस्ट मु.पो. भाण्डवपुर तीर्थ, जिला - जालोर - 343022 राजस्थान
आचार्य श्री विद्युत रत्न सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 15-7-2024 गुंदेचा गार्डन जैन संघ पेरू कंपाउंड गल्ली, गणेश टॉकिज के सामने लालबाग, मुंबई - 400012	आचार्य श्री अजितयश सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 15-7-2024 रामनगर जैन संघ चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन टेम्पल रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद - 380005, गुजरात	आचार्य श्री पुलक सागर महाराज प्रवेश: 15-07-2024 केसरीयाजी रिषभदेव जैन टेम्पल रिषभदेव, उदयपुर - 313802 राजस्थान	आचार्य श्री यशोभद्र सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 17-7-2024 301, पारुल अपार्टमेंट, क्रिस्टल वर्ल्ड के सामने, पतंजलि के पास, आनंदम सिटी, हरिद्वार, उत्तराखंड - 249407	आचार्य श्री मोक्षरत्न सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 14-7-2024 श्री मंडार जैन संघ, मंडार, जिला - सिरोही - 307513 राजस्थान
आचार्य श्री विनयसागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 7-7-2024 श्री पार्श्व वेनेड़िया जैन संघ लोढ़ा वेनेड़िया, पी4 जी.डी. आम्बेकर मार्ग काला चौकी, मुंबई - 400033	आचार्य श्री हंसरत्न सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 15-7-2024 पालरोड सकल जैन श्री संघ दिग्विजय नगर, जोधपुर - 342008 राजस्थान	आचार्य श्री लेखेन्द्र सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: -7-2024 शंखेश्वर तीर्थ, पार्श्व पद्मावती धर्मशाला, जिला पाटण - 384246 गुजरात	आचार्य श्री विमलसागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 7-7-2024 कल्याण मित्र वर्षावास समिति, गुरु भवन, शिक्षाकर सदन, रॉयल मार्ट के सामने, टी. नरसीपुरा रोड, मैसूर (कर्नाटक) - 571124	आचार्य श्री नयपद्म सागर सूरिश्वरजी महाराज प्रवेश: 19-7-2024 अंकीबाई गोवानी धर्मशाला तलेटी, पालीताणा, गुजरात - 364270

'जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

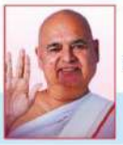

चातुर्मास - 2024 भाग - 3

आचार्य
श्री महानंद
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
7-7-2024

श्री चन्द्रप्रभू जैन देरासर
राजाराम मोहन राय रोड,
प्रार्थना समाज, मुंबई - 400 004

आचार्य
श्री संस्कारयश
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
15-7-2024

रामनगर जैन संघ
चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन टेम्पल
रामनगर, साबरमती,
अहमदाबाद - 380005, गुजरात

आचार्य
श्री राजपुण्य
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
7-7-2024

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय,
नवरोजी लेन, घाटकोपर (वेस्ट),
मुंबई - 400086

आचार्य
श्री कल्पज्ञ
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
4-7-2024

श्री सर्वोदय पार्श्वनाथ जैन संघ,
सर्वोदय नगर,
मुलुंड (वेस्ट),
मुंबई - 400080

आचार्य
श्री कीर्ति दर्शन
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
7-7-2024

श्री विमलनाथ जैन मंदिर
आराधना भवन, बालोतरा -
पचपत्र, बाडमेर - 344022
राजस्थान

आचार्य
श्री अरविंद सागर
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
19-7-2024

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि धर्म उद्यान
प्रेरणाधाम, लालगेबी आश्रम,
गिरनार तलेटी, जुनागढ -362001
गुजरात

आचार्य
श्री डॉ. विनीतप्रभ
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
13-7-2024

श्री शंखेश्वरपुरम् पार्श्वनाथ जैन श्वे. तीर्थ
पुरुलिया-बराकर मैन रोड,
मु. शंखेश्वरपुरम, पो. सांकड़ा, थाना-पाडा,
स्टे. अनाडा, जिला. पुरुलिया (प.बं.)

आचार्य
श्री प्रशांत सागर
सूरिश्वरजी महाराज

प्रवेशः
14-7-2024

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा सर्कल के पास, गांधीनगर,
अहमदाबाद रोड,
गांधीनगर-382426, गुजरात

युवाचार्य
श्री महेन्द्र ऋषिजी
महाराज

प्रवेशः
15-07-2024

श्री आनंद मरुधर केसरी मधुकर
मेमोरियल सेंटर, नं. 83,
गंगादेसवार्न कोईल, दुसरा स्ट्रीट,
पुरसवालकम, चैन्नई - 600084, तमिलनाडु

आचार्य
श्री दिव्यानंद
सूरिश्वरजी महाराज
(निराले बाबा)

प्रवेशः
19-7-2024

दिव्यानंद निराले बाबा भवन ,
स्ट्रीट नम्बर - 3, बैंक ऑफ बड़ौदा
वाली गली, न्यू अनाज मंडी रोड, पद्मपुर,
जिला - श्री गंगानगर - 335041, राज.

राष्ट्रसंत
श्री ललितप्रभ
महाराज

प्रवेशः
14-7-2024

46-48, 3रा ए रोड,
तनिष्क शो रूम के सामने,
सरदार पूरा, जोधपुर - 342003
(राजस्थान)

राष्ट्रसंत
श्री चंद्रप्रभ
महाराज

प्रवेशः
14-7-2024

46-48, 3रा ए रोड,
तनिष्क शो रूम के सामने,
सरदार पूरा, जोधपुर - 342003
(राजस्थान)

उपाध्याय
श्री अनंतचन्द्र
विजयजी महाराज

प्रवेशः
17-7-2024

श्री नसवाडी श्वे. मूर्तिपूजक जैन संघ
विश्राम गृह के सामने मेन रोड,
ता.पो. नसवाडी,
जिला - छोटाउदेपूर - 391152, गुजरात

उपाध्याय
श्री ऊर्जयन्त
सागरजी महाराज

प्रवेशः
12-7-2024

श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर
सेक्टर 8, प्रताप नगर,
जयपुर - 302033
राजस्थान

पंन्यास प्रवर
श्री चारित्ररत्न
विजयजी महाराज

प्रवेशः
07-07-2024

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ बावन
जिनालय जैन संघ,
बावन जिनालय, देवचंद नगर,
श्रीपाल नगर, भायंदर (वेस्ट)-401101

पंन्यास प्रवर
श्री कुलदर्शन
विजयजी महाराज

प्रवेशः
10-7-2024

श्री गौतम नगर जैन संघ,
देव हॉस्पिटल गली,
वासणा, अहमदाबाद -380007
(गुजरात).

गणिवर्य
श्री जयकिर्ति
विजयजी महाराज

प्रवेशः
17-07-2024

श्री आत्म वल्लभ जैन पंजाबी धर्मशाला
तलहेटी रोड
पालीताना- 364270
जिला भाव नगर, गुजरात

मुनिराज
श्री धर्मानंद विजयजी
महाराज 'ध्रुव'

प्रवेशः
14-7-2024

श्री भायखला आग्रीपाड़ा जैन संघ
भायखला,
मुंबई - 400011

मुनिराज
श्री विश्वोदयकीर्ति
(वीके) सागरजी
महाराज

प्रवेशः
14-7-2024

श्री आदेश्वर भगवान जैन पेढ़ी - उपाश्रय
बड़े मन्दिरजी के पास
तखतगढ़, जिल्ला - जालोर - 306912
राजस्थान

मुनिराज
श्री चंद्रयश
विजयजी महाराज

प्रवेशः
17-07-2024

श्री राजेन्द्र जैन पोषधशाला
पिपली बाजार,
जांवरा - 457226
मध्यप्रदेश

मुनिप्रवर
श्री पीयूषचंद्र
विजयजी महाराज

प्रवेशः
15-07-2024

श्री नमिनाथ प्रभु जिनालय एवं उपाश्रय
कामाठीपुरा 8वीं गल्ली
मुंबई - 400008

मुनिराज
श्री हेमन्त
विजयजी महाराज

प्रवेशः
14-7-2024

ज्योति विनोद जैन उपाश्रय,
जीपीओ के सामने,
चांदी बाजार, जामनगर - 361001

मुनिराज
श्री भुवनहर्ष
विजयजी महाराज

प्रवेशः
14-7-2024

नवग्रह आराधनाधाम जैन तीर्थ,
दाहोद रोड, लक्झुरा होटेल के पास,
टोयोटा शोरूम के सामने ,
गोधरा-389001

मुनिराज
श्री धर्मचंद
विजयजी महाराज

प्रवेशः
08-7-2024

श्री कलापूर्ण विहार धाम,
केशवणा - 303108
राजस्थान

मुनिराज
श्री तत्वेशचंद्र
विजयजी महाराज

प्रवेशः
07-07-2024

श्री भाग्यवर्धक चीकुवाड़ी जैन संघ,
चीकुवाड़ी, बोरीवली (वेस्ट),
मुंबई - 400 092

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

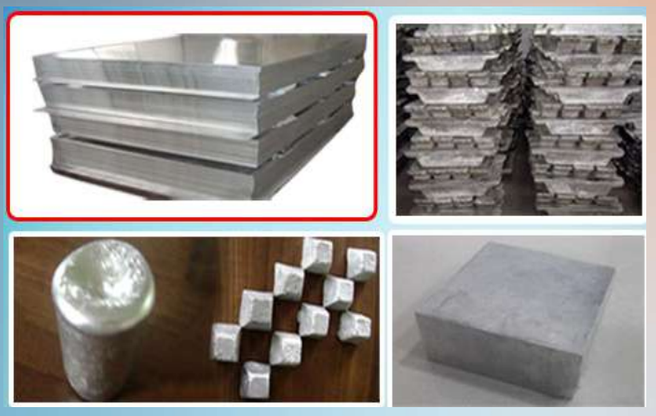

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

कर्नाटक राज भवन में १० राज्यों का स्थापना दिवस मनाया गया. बिहार, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना की स्थापना दिवस के उपलक्ष में ग्लास हाउस में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उन राज्यों के नागरिक उपस्थित थे। सभी १० राज्यों के राज्यपालों का राष्ट्र के नाम संदेश पर्दे पर दिखाया गया, राज्यपालों ने अपने संदेश में वहां के प्राकृतिक वैभव, सभ्यता, संस्कृति, परंपराओं, दार्शनिक स्थलों, उपलब्धियों एवं गौरवमय इतिहास का वर्णन करते हुए देशवासियों को पर्यटन के लिए उनके राज्य में आने का न्यौता दिया। सभी १० राज्यों के कलाकारों ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। सभी १० राज्यों के प्रतिनिधियों ने अपने राज्यों का बखान करते हुए कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत का आभार व्यक्त किया गया। राजस्थान मूल के युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत ने जन समूह को संबोधित करते हुए कहा, 'कर्नाटक' हमारी कर्मभूमि है, हम यहां की भाषा को सीखें, यहां की संस्कृति का सम्मान करें, यहां के लोगों के साथ प्रेम-सद्भावना बनाए रखें एवं सेवा भाव से यहां के विकास में योगदान दें, साथ ही यह भी याद रखें कि हमारी जन्मभूमि के हमारे ऊपर असीम उपकार हैं और अपनी माटी से भी जुड़े रहें। राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने सभी को स्थापना दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कलाकारों एवं प्रतिनिधियों को सम्मानित किया। राज्यपाल गहलोत ने भारत भर में राज्यों की स्थापना दिवस मनाने के महत्व पर प्रकाश डाला, उन्होंने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के आदर्शों पर जोर देते हुए कहा कि इस तरह के समारोह सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं, उन्होंने देश के ऐतिहासिक महलों में प्रत्येक राज्य का स्थापना दिवस मनाने की पहल के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया यह जानकारी श्री भूपेन्द्र एस. भानावत ने 'जिनागम' को भेजी है।

भारत को 'भारत' ही बोलें
आइये हम सब मिलकर इसकी शुरूआत करें
जय भारत से...

स्नेहा संजीवनी महिला मत्तु मक्कल क्षेमाभिवृद्धि संस्था द्वारा कल्याणनगर स्थित ज्ञानसौधा में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत को सम्मानित करते हुए सुशीला मां एवं संस्था के पदाधिकारी।

मारुति मेडिकल्स, विजयनगर की ओर से मारुति मेडिकल परिसर में विशाल रक्तदान शिविर में रक्तदान के लिए भारी संख्या में लोग उमड़े। १८० यूनिट रक्त का संग्रहण किया गया। मल्लेश्वरम् के बेंगलूरु ब्लड बैंक के सहयोग से आयोजित इस शिविर में मारुति मेडिकल्स के प्रमुख, युवा समाजसेवी, गौसेवी महेन्द्र मुणोत के नेतृत्व में व्यवस्था की गई। पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित सालुमारदथिमक्का ने भी शिविर में उपस्थिति और आयोजकों को शुभकामनाएँ दीं। रक्तदाताओं को प्रमाणपत्र व पौधे वितरित किए गए। श्री मुणोत ने रक्तदान का महत्त्व बताते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि 'रक्त अनमोल होता है और यह किसी को जीवनदान देने के समान होता है।'

विभिन्न समाजों, संगठनों की गतिविधियों में सक्रिय सहयोग देने वाले श्री मुणोत के आह्वान पर राजस्थानी, कन्नड़ व महिला संगठनों ने भी रक्तदान में सहभागिता निभाई। कर्नाटक रक्षण वैदिके के प्रदेश अध्यक्ष शिवराम गौड़ा, कस्तूरी कर्नाटक जनपर वैदिके के रमेश गौड़ा, पूर्व पार्षद एच. रवीन्द्र, पूर्व पार्षद उमेश शेट्टी, पूर्व पार्षद चन्द्रशेखर उपस्थित रहे और रक्तदाताओं को धन्यवाद दिया। प्रभुपाद गौशाला के आनंद कृष्णा दास, अमृतधारा गौशाला के बीजे शर्मा, विहंगम योग संस्थान के संत किशनलाल, 'धीर' के प्रधान सम्पादक धीरेन्द्रकुमार, 'वर्तमान दर्शन' के प्रधान सम्पादक प्रवीणभाई शाह, मेवाड़ ओसवाल साजनान संघ कर्नाटक बेंगलूरु के कोषाध्यक्ष भूपेन्द्र एस. भानावत सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे। इससे पहले महेन्द्र, श्रीमती सुरक्षा मुणोत सहित परिवार ने गौपूजा के माध्यम से कार्यक्रम की शुरूआत की थी। यह जानकारी भूपेन्द्र एस. भानावत ने एक विज्ञप्ति द्वारा 'जिनागम' को भेजी है।

श्री जैन संघ में पूज्यश्री आचार्यगणों का चातुर्मास प्रवेश

चातुर्मास प्रवेश पर दुबई से भक्तगण पधारे थे

मुंबई: जब आस्था और श्रद्धा से मानव मन सराबोर हो जाता है तो भक्ति उसे कहीं भी खींच ले जाती है, ऐसा ही दृश्य उस समय नजर आया जब अहमदाबाद के श्री नवरंगपुरा जैन संघ के संयोजन में आयोजित मंगल चातुर्मास प्रवेशोत्सव में शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में मुंबई से श्रावक अपने गुरुदेव का सानिध्य पाने के लिए पहुंचे। १७ जुलाई को देवशयनी एकादशी से प्रारंभ हुए 'चातुर्मास' में साधु संतों की टोली स्थान विशेष पर रहकर चार महीने तक सत्संग और प्रवचन के माध्यम से ज्ञानगंगा प्रवाहित करना शुरू कर दिया है। मुंबई से सपरिवार शामिल हुए श्रावक 'जिनागम' के पत्रकार प्रशांत झवेरी ने बताया कि पालना के साथ सांचोरी (सत्यपुर) तीर्थोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय कनकप्रभ सूरीश्वरजी महाराज के पट्टधर पूज्य आचार्य श्री कीर्तिप्रभ सूरीश्वरजी महाराज, युवा प्रवचनकार डॉ. मुनि श्री संयमप्रभ विजय जी महाराज आदि गुरु भगवंतों का चातुर्मासिक प्रवेश हो चुका है, 'चातुर्मास' स्थापना के समय गुरुदेव के परम भक्त दुबई के शेख यासीन शरीफ बु. अब्दुल्लाह, डॉ. तौसीफ पाशा, कश्यप जानी, हसू कपासी, रोहित झवेरी विशेष मेहमान के रूप में उपस्थिति थे। प्रवेश के रथयात्रा में हजारों श्रद्धालु शामिल थे,

सभी ने गुरुदेव और ट्रस्ट मंडल के साथ मुस्लिम श्रद्धालुओं को जैन ग्रंथ आगम भी भेंट किया था।

सकल जैन समाज जल क्रांति मिशन के तहत

भारतीय जैन संघठना ने देश के १०० जिलों की जिम्मेदारी ली

सागर: सकल जैन समाज का संगठन 'भारतीय जैन संघठना' (बीजेएस) जिले के ग्रामीण अंचलों में खत्म हो चुके तालाबों को पुनर्जीवन देगा। संगठन ने सकल जैन समाज जल क्रांति मिशन के तहत देश के १०० जिलों की जिम्मेदारी ली है। संगठन के मुख्यालय ने इसके लिए जिले में सर्वे शुरू कर दिया है। पहले चरण में जिले के १० तालाबों का जीर्णोद्धार करने का लक्ष्य तय किया गया है, इस मिशन से तालाबों को पुनर्जीवन तो मिलेगा ही, इनकी मिट्टी खेतों में डाले जाने से उपजाऊ क्षमता बढ़ेगी और किसानों को भी फायदा होगा।

'भारतीय जैन संगठना' सकल जैन समाज की ही एक संस्था है जिसने गांवो में तालाबों के पुनर्जीवन की बीड़ा देश भर में उठाया है। बीजेएस सागर डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट मनोज जैन लालो ने बताया इसी के अंतर्गत ग्राम पंचायत नैनधरा, तहसील बंडा में तालाब गहरीकरण का कार्य जेसीबी के माध्यम से शुरू किया गया है। तालाब का भूमिपूजन पंडित उदय चंद शास्त्री के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संगठन के सचिव सुकमाल जैन नैनधरा, संजय जैन दिवाकर, महेंद्र मिश्रा, नीलेश जैन भूसा, कमलेश चौधरी, सुनील शाहगढ़, प्रसन्न जैन, संतोष स्टील, मुन्ना पुजारी, भूरे गोड सरपंच, लाखन सिंह लोधी, बुठु सिंह लोधी, आशीष जैन नीरज जैन, फूल सिंह लोधी, मुकेश साहू सचिव, भोले सिंह लोधी आदि सम्मिलित हुए।

श्री जैन ने बताया कि अगर हम टेक्निकल सर्वे करके तालाबों की मिट्टी निकलते हैं तो वह तालाब पानी से लबालब भरेंगे इसके साथ-साथ पानी का जमीन में रिसाव होगा और गांव की कुएं तथा बोरवेल को भी पानी मिलेगा। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत नैनधरा, ग्राम पंचायत कदवा, ग्राम चौकी बेड़ा एवं पजनारी में तालाब का सर्वे किया गया है। बीजेएस हेड ऑफिस द्वारा ५ राज्यों में १२५ तालाबों के गहरीकरण का यह मिशन चलाया जा रहा है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

जीवन में सकारात्मक सोच जरुरी

-अंतर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज

हैदराबाद: आगापुरा दिगम्बर जैन मंदिर में परिणामों के खेल प्रवचन माला के तीसरे दिन अपार जन समुह को सम्बोधित करते हुए जैन धर्म के सर्वोत्कृष्ट तपस्वी, ५५७ दिन में मात्र ६१ दिन आहार लेने वाले, अंतर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज ने कहा की चाय देर से गर्म होती है परंतु ठंडी जल्दी होती है लेकिन आदमी गर्म जल्दी होता है और ठंडा देर से होता है, अगर आपको जीवन में सफल होना है तो थोड़ी सुनने की, थोड़ी सहने की, थोड़ी सुधरने की आदत डालिये इस अवसर पर उपाध्याय मुनि श्री १०८ पीयूष सागर जी महाराज ने कहा की विभाव परिणीति में लिप्त रहने के कारण व्यक्ति पतन की ओर जा रहा है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक सोच बहुत आवश्यक है।

प्रवर्तक मुनि श्री १०८ डॉ. सहजसागर जी महाराज ने कहा की कषाय से अनुरंजित योग के परिणाम लेश्या कहलाते हैं।

आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज ने तरुण सागर जी महाराज की जन्म जयंती के अवसर पर उनको विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वह हमारे संघ के सबसे वरिष्ठ सदस्य थे, उन्होंने मात्र ११ वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया। वर्तमान में वह सबसे कम आयु में दीक्षा लेने वाले मुनि बने, जिन्होंने जैन धर्म को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष विनोद बज, मंत्री राजेश पाटनी, कोषाध्यक्ष महेंद्र चांदुवाड, सहकोषाध्यक्ष संजीव कासलीवाल, सह मंत्री पंकज छाबड़ा, सत्येंद्र जैन, सुनील पहाडे, राजेश पहाडे, अनिल पहाडे, प्रदीप पहाडे, शांतिलाल झांझरी, प्रकाश झांझरी, मांतीलाल झांझरी, मनोज चौधरी, सुमित पांड्या एवं समाज के गणमान्य व्यक्ति एवं देश भर के अनेक कोने से पधारे हुए लोग उपस्थित थे।

- नरेंद्र अजमेरा
पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

वर्धमान ग्रुप ने बिबवेवाडी चातुर्मास का शुभारंभ आधुनिक पद्धति के साथ किया

पुणे: वर्धमान ग्रुप पुणे, पिछले ४ वर्षों से चातुर्मास के अवसर पर वीडियो बनाने का अनूठा काम कर रहा है, इस वर्ष भी इस परंपरा को जारी रखते हुए उन्होंने बिबवेवाडी जैन स्थानक के चातुर्मास प्रवेश निमंत्रण वीडियो के साथ चातुर्मास २०२४ का शुभारंभ किया। यह वीडियो बिबवेवाडी जैन स्थानक के अध्यक्ष पोपटलालजी ओस्तवाल के शुभहस्ते जारी किया गया, इस अवसर पर बिबवेवाडी संघ के गणमान्य सदस्य, पोपटलालजी ओस्त-वाल, माणिक दुगड, अविनाश कोठारी, गणेश ओसवाल, अशोक नहार, चंद्रकांत लुंकड, सौ. सेजल कटारिया, निलेश कोठारी और हर्षद बलदोटा उपस्थित थे। यह वीडियो न केवल चातुर्मास के कार्यक्रमों का निमंत्रण देता है, बल्कि जैन धर्म के महत्व और आध्यात्मिकता के संदेश को भी दर्शाता है। वर्धमान ग्रुप के इस प्रयास की सराहना करते हुए, बिबवेवाडी जैन स्थानक के अध्यक्ष पोपटलालजी ओस्तवाल ने कहा, 'यह वीडियो निश्चित रूप से लोगों को चातुर्मास के महत्व को समझने और उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करेगा।' वर्धमान ग्रुप का यह चातुर्मास निमंत्रण वीडियो एक सराहनीय पहल है जो जैन धर्म के प्रचार- प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

१९४६ में औरंगाबाद में आचार्य शांतिसागर महाराज जी आए थे, स्वतंत्रता सेनानी श्री माणिकचंद की पहाड़े, इन्हीं के कारण निजाम राज्य में आचार्य शांतिसागर जी महाराज औरंगाबाद आए थे, उन्होंने हैदराबाद जाकर अदालत में केस लड़ा था और परमिशन लाए थे, आज इन्हीं के नाम पर एम.पी. लॉ कॉलेज बना हुआ है। फोटो में माणिकचंद की पहाड़े सफेद धोती कुर्ता टोपी में दिखाई दे रहे हैं।

ऐतिहासिक संकलन चित्र

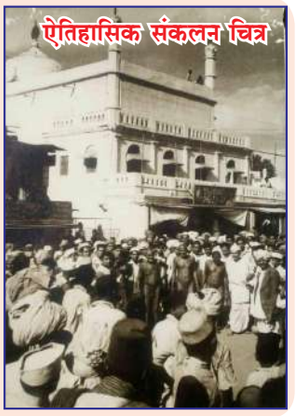

वसंत रांका श्री आत्म वल्लभ जैन सेवा मंडल के अध्यक्ष बने

मुंबई: परम पूज्य आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज के आशीर्वाद से स्थापित संस्था श्री आत्म वल्लभ जैन सेवा मंडल- सादड़ी के अध्यक्ष पद पर वसंत जंवतराज रांका सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए, यह नियुक्ति तीन साल के लिए होगी। गोरेगांव स्थित राजस्थान हॉल में हुई एजीएम में प्रदीप राठौड़ (सेलो ग्रुप), खुबीलाल राठौड़ आदि वरिष्ठ सदस्यों की बातों का मान रखते नरेश रांका अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन नहीं भरा, उन्होंने कहा कि संस्था हित सर्वोपरि है, वे संस्था के विकास में अपना पूरा सहयोग देंगे। वसंत रांका २०२४-२७ के लिए नई कमिटी की घोषणा की। वसंत रांका ने अध्यक्ष पद स्वीकारने के बाद कहा कि वे सभी को साथ लेकर मंडल के कार्यों को आगे बढ़ाएंगे, उन्होंने कहा कि बोलने से ज्यादा वे काम करने में विश्वास रखते हैं। दोनों उम्मीदवारों ने देश के विभिन्न राज्यों से आए सादड़ी निवासियों का आभार व्यक्त किया। प्रदीप राठौड़ (सेलो ग्रुप), हेमंत जैन (किलर ग्रुप) सहित उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने नव निर्वाचित अध्यक्ष को बधाई दी, कार्यक्रम का संचालन मंडल के सचिव दिलीप सुंदेशा ने किया, कार्यक्रम में केवलचंद जैन, दिनेश जैन, प्रदीप रांका, रमेश रांका, गिरीश राठौड़, श्रीपाल बाफना, किशोर जैन, पारस मेहता, विमलचंद धोका, घीसुलाल करबावाला, मदनलाल धोका, विजयराज राठौड़, नगराज भंडारी, सुरेश राजावत, विकास जैन, अरूण शाह, के.के. शाह, राजु शाह, महेन्द्र जोधावत, चांदमल जैन, सुरत से गुमाचंदजी रांका, विमल रांका, बाबुलाल रांका, विमलचंद (रोजी), अशोक रांका, भरत रांका, मुकेश रांका, राजु जैन, संपत शाह, प्रविण, हर्षद सहित ५०० सदस्य उपस्थित थे।

धर्म का अर्थ क्या है?

क्या मंदिर जाना है? तपस्या करना है?
विशेष तिथि का त्याग करना है? कंदमूल का त्याग करना है?
क्या सामसिक, प्रतिक्रमण और तप करना है?
असल में इन चीजों का उद्देश्य स्वभाव को बदलना है।
लेकिन अक्सर लोग जीवन भर यह क्रियाएं करते हैं और इसे ही धर्म मान लेते हैं।
लेकिन वे अपने अहंकार को छोड़कर सरल नहीं बन सकते हैं।
क्रोध और जुनून छोड़कर विनम्र नहीं बन सकते हैं।
ईर्ष्या छोड़कर उदार नहीं हो सकते। जब तक कि व्यक्ति अपनी आत्मा को बदलने के लिए दृढ़ निख्य नहीं करता है, तब तक कठोर सच्चाई यह है कि कोई भी भगवान, गुरू या धर्म कुछ भी भला नहीं कर सकते। महावीर, जैसे सर्व शक्तिशाली जमाली, गोशालक या संगमदेव को भी नहीं बदल सके। इसलिए सबसे पहले अपने आपको बदलो। स्वभाव बदलो, और भाव बदलो, परिणाम तभी मिलेगा। **-रमेश जैन, कोलकाता**

चातुर्मास पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन
LEADING LARGE CARDAMOM (BADI ELAICHI) SUPPLIER IN SILUGURI
-: DEALSERS IN :-
BIG CARDAMOM SEEDS, BAY LEAVES TEJPATTA, KUTTU, BLACK SEASMSEED
& ALL HILL PRODUCTS MERCHANTS & COMMISSION AGENTS
P.C JAIN & SONS
Naya Bazar, Siliguri, Darjilind, West Bengal, Bharat - 734005
Ph. : 0353 - 2504641, 2776250 Resi : 0353 - 2776252, 2776261
Mob. : 9332259884, 09382648716
BL Jain Mob. : 9641486705 SK Jain Mob. : 8617481860
e-mail : bljain1956@g.mail Web : www.bestblackcardamom.com
Commission Agents -: Associated :- Big Cardamon
SHANTI ENTERPRISES
Super Stockitts of R.L Masala, Siliguri, Darjiling, West Bengal, Bharat - 734005
-: Organiser :-
Babulal Jain (Journalist)
Surendra Kumar Jain
-: Delhi Office :-
Om Prakash Shakhawal Mob. : 9311135916 Ph. : 011 - 41410140
PEE CEE ENTERPRISES
54/5, Gandhi Gali, Katra Peran Tilak Bajar, Khari Baoli, Delhi, Bharat - 110006
TRADE ENQUIRIES SOLICIATED

चातुर्मास के पावन पर्व पर सभी साधु-साध्वियों के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन
Sandeep Baid
Mob: 9830478236
KIDZELLO FASHION
Godown No. D2, Bengal Jute Mill Compound 493B, G. T. Road (S), Shibpur, Howrah, West Bangal, Bharat - 711102
E-mail: kidzellofashion@gmail.com

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेगें INDIA नहीं

जयप्रकाश बोहरा
अध्यक्ष श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
नाथद्वारा निवासी-नवी मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२१६७३००७

जयप्रकाश जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' के समय गुरु भगवंतों के सानिध्य का अधिकार मिलता है, उनके माध्यम से धर्म की बातों की अधिक जानकारी प्राप्त होती रहती है उनके आशीर्वचन हमेशा मिलते रहते हैं, जिससे धर्म की प्रभावना बढ़ जाती है, इस दौरान जैन समाज में धार्मिकता की लहर दौड़ती है, लोगों में धार्मिक क्रियाओं के प्रति एक अलग ही उत्साह दिखाई देता है, गुरु-भगवंतों की सेवा का लाभ मिलता है, इसीलिए 'चातुर्मास' हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

आज की युवा पीढ़ी को भी अपने धर्म और समाज से जोड़ने के लिए 'चातुर्मास' ही सबसे उत्तम माध्यम है, माता-पिता को चाहिए कि अपने बच्चों को गुरु-भगवंतों के सानिध्य में नित्य ले जाएं, उनके आशीर्वचन का लाभ दिलवाएं, जिससे उनके मन में भी धर्म और समाज के प्रति रुझान का निर्माण हो।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' तो होनी जरूरी है, आज हमारा समाज कई पंथों में बंटा हुआ है, पर यह एक मात्र व्यवस्था है, सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर के सिद्धांत हैं, उनके बताए मार्गों का अनुसरण सभी करते हैं, भले ही पद्धतियां अलग-अलग हैं, पर सभी का लक्ष्य एक ही है, अपने धर्म और समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जैन समाज में एकता होना बहुत जरूरी है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

जयप्रकाश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नाथद्वारा' के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षों से महाराष्ट्र के मुंबई में बसा हुआ है, आप यहां आभूषणों के कार्य से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नवी मुंबई के अध्यक्ष हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!

विजय कुमार मुणोत
महामंत्री श्री साधुमार्गी जैन संघ
पाली निवासी-हैदराबाद निवासी
भ्रमणध्वनि: ९९८९३११०९०

विजय जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' हमारे जीवन में विटामिन की तरह है, जिस तरह साधारण भोजन से हमारे शरीर को वह ताकत नहीं प्राप्त हो पाती, जो होनी चाहिए, उसके लिए हमें पोषक तत्व लेने की आवश्यकता पड़ती है, इस तरह 'चातुर्मास' हमारे आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन के लिए एक पोषक तत्व ही है जो हमें अवसर प्रदान करते हैं, धर्म व धार्मिक क्रियाओं से जुड़ने के लिए, उनसे होने वाले लाभ को प्राप्त करने के लिए, साधु-संतों के आशीर्वाद और आशीर्वचन को प्राप्त करने के लिए। यह हमें मौका देता है, आध्यात्मिक चिंतन की ओर बढ़ने के लिए, इसीलिए 'चातुर्मास' बहुत ही महत्वपूर्ण है। वर्तमान में पूरे हैदराबाद में २६ स्थानों पर 'चातुर्मास' हो रहे हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि यह तभी संभव होगा जब हमारे साधु-भगवंत चाहें, इसके लिए सर्वप्रथम हमारे संपूर्ण जैन पंथ की 'संवत्सरी' एक साथ एक रूप में मनाई जानी चाहिए और यह कार्य गुरु-भगवंतों द्वारा ही संभव किया जा सकता है, इसीलिए 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है, अपने समाज को आगे बढ़ाने के लिए, समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए...

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से कम ही जुड़ा हुआ है, वह आधुनिक जीवन और पाश्चात्य सभ्यता की ओर इतना आकर्षित हो चुका है कि उन्हें अपने धर्म समाज के लिए समय ही नहीं है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

विजय जी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित 'बोसी गांव' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ४० सालों से 'हैदराबाद' में बसे हुए हैं और प्लास्टिक मैन्युफैक्चरिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। साधुमार्गी जैन संघ में पिछले ४ सालों से महामंत्री व श्रमण संघ के स्थानक में भी महामंत्री के पद पर कार्यरत हैं। साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी में भी सदस्य हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!

धरमचंद मंडलेचा
अध्यक्ष, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ सिल्लोड़
नीमच निवासी-सिल्लोड़ प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२०२४५२५२

धरमचंद जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' का समय धर्म-ध्यान के लिए सबसे उत्तम समय होता है, इस समय साधु-संतों का निवास एक स्थान पर होने से उनके सानिध्य और आशीर्वचन प्राप्त करने का हमें अवसर प्राप्त होते रहते है, इस दौरान धर्म से जुड़ी क्रियाएं बढ़ जाते हैं जिससे मन पूरी तरह से धार्मिकता की ओर बढ़ता है और हमारे जीवन में सकारात्मक बातों का निर्माण होता है जो हमें आध्यात्मिकता की ओर ले जाते हैं, अतः 'चातुर्मास' होना जरूरी है और इससे जुड़ना भी बहुत जरूरी है।

वर्तमान में हमारे यहां आचार्य श्री पदम ऋषी जी म.सा., श्री शालीभद्र मुनि जी म.सा. व प्रणव मुनि जी म.सा का चातुर्मास हो रहा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य हमारे समाज में एकता होना बहुत जरूरी है पर आज हमारा समाज इतने पंथ में बंटा हुआ है और सभी की अपनी-अपनी विचारधाराएं हैं, तो एकता कैसे स्थापित हो सकती है? एकता का प्रयास यदि हमारे गुरु-भगवंतो द्वारा किया जाए तो अवश्य ही वे हमारे समाज में एकता आवश्यक स्थापित होगी।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, उन्हें जोड़ना जरूरी है, समाज और परिवार का दायित्व है कि युवाओं को अधिक से अधिक धार्मिक क्रियाओं से जोड़ा जा सके, तभी उनके अंदर धर्म और समाज के प्रति रुचि निर्माण होगी।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहना चाहिए 'भारत' जो प्राचीन काल से हमारे देश का नाम रहा है।

धरमचंद जी मूलतः राजस्थान स्थित नीमच के निवासी हैं, आपका परिवार १०० सालों से महाराष्ट्र में बसा हुआ है, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'पलसी' गांव में संपन्न हुई है, वर्तमान में ४० सालों से सिल्लोड़ में बसे हुए हैं और हार्डवेयर और ट्रैक्टर के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, सिल्लोड़ श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ के अध्यक्ष हैं, श्री गुरु गणेश गौशाला में भी प्रमुख की भूमिका निभा रहे हैं अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

शांतिलाल मुथा
अध्यक्ष श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ
पिपाड निवासी-रायचूर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४४०४५६४१

शांतिलाल जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज के भौतिकवादी जीवन में आध्यात्मिक व धार्मिक जीवन के लिए 'चातुर्मास' ही सबसे उत्तम माध्यम है, विशेषकर बच्चों को धर्म और समाज से जोड़ने के लिए उन्हें धर्म का लाभ मिले, इसके लिए 'चातुर्मास' आज के परिपेक्ष में बहुत ही महत्वपूर्ण है। चातुर्मास होते हैं तो हमें गुरु भगवंतो के सानिध्य का अवसर प्राप्त होता है, धर्म-ज्ञान की बातें अधिक होती हैं, गुरु के आशीर्वचन प्राप्त होते हैं, जिसे हमारा धार्मिकता की ओर लगाव बढ़ता है हमें धर्म लाभ प्राप्त होते है, इसीलिए 'चातुर्मास' जरूरी है। हमारे यहां वर्तमान में नरेशमुनि म. सा. आदि ठाणा २ का व साध्वी मल्लिकाश्री आदि थाना ५ क चातुर्मास हो रहा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि एकता होना तो बहुत जरूरी है और इसके लिए सभी संघ को मिलकर प्रयास करना होगा, तभी यह कार्य संभव हो सकता है, हमारे यहां तेरापंथ, मंदिरमार्गी, दिगम्बर, स्थानकवासी सकल जैन समाज द्वारा महावीर जन्मकल्याण पर्व व अन्य पर्व एक साथ एक रूप में मनाया जाते हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर जा रही है, इसका कारण समाज में फैला संप्रदायवाद है क्योंकि संप्रदायवाद के कारण आज युवा वर्ग भ्रमित है, इसीलिए वह धर्म और समाज से दूर जा रहा है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं समर्थन करता हूं।

शांतिलाल जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'पीपाड़' सिटी के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा कर्नाटक के 'रायचूर' में संपन्न हुई है, यहां आप कॉटन के व्यवसाय से जुड़े हैं साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ रायचूर के अध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी यथासंभव जुड़े रहते हैं। जय भारत!

'जिनागम' समस्त जैनों की एकमात्र पत्रिका है इसे पढें व अन्यों को भी पढायें...

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

बसंत पटावरी
सचिव श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दक्षिण हावड़ा
मोमासर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३११६४६६३

बसंत जी 'चातुर्मास' के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि आज के परिपेक्ष में 'चातुर्मास' का बहुत अधिक महत्व है, जिस तरह हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता की ओर बढ़ रही है, उनके लिए 'चतुर्मास' अति आवश्यक है। 'चातुर्मास' के समय चरित्र आत्माओं (गुरू-भगवंतों) का एक स्थान पर निवास होता है, उनसे अधिक से अधिक धर्म संबंधी लाभ प्राप्त होते हैं। हर माता-पिता को यह चाहिए कि वे अपने बच्चों के साथ गुरु-भगवंतों के सानिध्य में नित्य जाएं, उन्हें भी उनके दर्शन और आशीर्वचन का लाभ दिलवाएं, जिससे युवाओं में भी धर्म और समाज के प्रति रुझान उत्पन्न हो। 'चातुर्मास' के समय धर्म की प्रभावना अधिक होती है, हमारा मन भी धार्मिक भावनाओं से भर जाता है, जो हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसीलिए 'चातुर्मास' होना जरूरी है। वर्तमान में हमारे यहां दक्षिण हावड़ा में आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि श्री जिनेश जी म.सा. आदि ठाणा तीन का चातुर्मास हो रहा है।

तेरापंथ प्रथम आचार्य भिक्षु जी के अवतरण दिवस व तेरापंथ धर्म संघ स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तेरापंथ धर्म संघ का हर व्यक्ति अपने आपको सौभाग्यशाली मानता है की उसे जैन धर्म के साथ-साथ आचार्य भिक्षु जैन परंपरा के प्रत्येक आचार्यों के सानिध्य का अवसर प्राप्त होता है। आचार्य श्री भिक्षु ने जो क्रांति की थी, वह सिर्फ तेरापंथ धर्म संघ के लिए ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व के लिए एक उदाहरण है, उन्होंने जो क्रांति का बिगुल बजाया जो पूरे जैन समाज में अपना एक अलग स्थान रखता है, आचार्य भिक्षु ने नई चेतना जगाने का काम किया, उन्होंने जो बीज बोया वह आज तेरापंथ धर्म संघ के अनुरूप वटवृक्ष के रूप में पूरे 'भारत' ही नहीं विश्व में फैला है। हमारे यहां कोलकाता में आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस और तेरापंथ स्थापना दिवस पर तीन दिवसीय 'तेलातप अनुष्ठान' कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि यदि हम बिखरे रहेंगे तो हमारी कहीं कोई पहचान नहीं रहेगी, अपने धर्म और समाज की पहचान बनाए रखने के लिए संपूर्ण जैन पंथों को एक साथ-एक मंच पर आना होगा। २०१७ में आचार्य श्री महाश्रमण जी ने डॉ. शिवमुनि जी म. सा. और आचार्य श्री रामेश जी के साथ २५ वर्षों तक के लिए संवत्सरी एक साथ करने का निश्चय किया गया, इसी तरह अन्य पंथ और समाज के लोग भी एक साथ प्रयास करें तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

बसंत जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'मोमासर' के निवासी हैं, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान में संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'कोलकाता' से ग्रहण की है, कोलकाता में आप कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। दक्षिण हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के ११ वर्षों से मंत्री पद का दायित्व निभा रहे हैं। तेरापंथ युवक परिषद कोलकाता में भी विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे हैं, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकारिणी के भी सदस्य रहे हैं। अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

श्याम कुमार बैद
सीए व समाजसेवी
भीनासर निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३१४८३७१८

श्याम जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' की हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है, 'चातुर्मास' का मनुष्य के धार्मिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। 'चातुर्मास' के दौरान साधु-संतों का एक ही स्थान पर निवास होता है, जिससे श्रावकों को साधु-संतों के सानिध्य का लाभ प्राप्त होता है। यदि लोगों को साधु संतों के सानिध्य का अवसर नहीं प्राप्त हो तो वे धर्म से विमुख हो जाएंगे, 'चातुर्मास' ही हमें हमारे धर्म से जोड़े रखता है, यह हमें आत्म अवलोकन का अवसर प्रदान करता है। आने वाली पीढ़ी को भी अपने धर्म और समाज से जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है, इसीलिए चातुर्मास बहुत जरूरी है, वर्तमान में हमारे यहां सतिया सम्याश्री जी आदि ठाणा चार का 'चातुर्मास' हो रहा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है, एकता में बड़ी ताकत होती है, जो हर असंभव कार्य को संभव कर सकती है, जब हमारे २४ तीर्थंकर एक हैं, णमोकार मंत्र हमारा एक है तो फिर यह अलगाव और पंथ क्यों? 'जैन एकता' स्थापित करने के लिए त्याग की भावना अपनानी होगी और सभी को इस दिशा में कार्य करना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर हो रही है, अन्य धर्म के प्रति उनका लगाव बढ़ रहा है इस पर गहन विचार करने की आवश्यकता है। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, मैं इस अभियान का पूर्ण समर्थन करता हूं। 'भारत' नाम में जो अपनापन है वह इंडिया में नहीं।

श्याम जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'भीनासर' के निवासी हैं, आपका जन्म 'भीनासर' में और प्रारंभिक शिक्षा 'पटना' में संपन्न हुई है। आपने कोलकाता से सीए की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में सीए के प्रोफेशन से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं, पूर्व में ८ सालों तक हिंदमोटर साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

अजीत बापना
अध्यक्ष श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
भीलवाड़ा निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२७१२३७२४

अजीत जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं, कि जैन समाज 'चातुर्मास' के बिना अधूरा है, 'चातुर्मास' का महत्व पहले भी था और आज के परिपेक्ष में इसकी सार्थकता और अधिक बढ़ जाती है, जैन समाज श्रावकों को यह ४ महीने मिलते हैं, अपने जीवन को बदलने के लिए, धार्मिक गतिविधियों से जुड़ने के लिए, 'चातुर्मास' के समय धर्म से जुड़ी प्रभावना बढ़ जाती है, 'चातुर्मास' में लोगों के जीवन में नई चेतना आती है, 'चातुर्मास' के दौरान साधु-संतों के सानिध्य का अवसर प्राप्त होता है, धर्म-ध्यान का अवसर प्राप्त होता है, विशेषकर बच्चों को साधु-संतों से, समाज-धर्म से जोड़ने के लिए 'चातुर्मास' ही सबसे उपयोगी समय है। उनके लिए यह एक वरदान से कम नहीं है, इसीलिए 'चातुर्मास' का विशेष महत्व है। वर्तमान में हमारे यहां महासाध्वी डॉ. श्री चन्द्रप्रभा म.सा. और साध्वी श्री जिनप्रभा म.सा. जी का 'चार्तुमास' आयोजित है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि एकता तो बहुत ही जरूरी है, बिना एकता के एक परिवार नहीं चलता तो समाज कैसे चलेगा और यह सब हमारे साधु-भगवंतों के द्वारा ही संभव हो सकता है, क्योंकि श्रावक वर्ग उन्हीं के अनुयाई हैं, यदि सभी पंथ के साधु-संत एक साथ, एक मंच पर आ जाएं तो 'एकता' स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, ऐसा हम नहीं कह सकते, युवाओं को वैज्ञानिक और आधुनिक आधार के माध्यम से धर्म और समाज से जोड़ा जा सकता है, यदि उन्हें धर्म से जुड़ी चीजों को वैज्ञानिक तरीके से स्पष्टीकरण दिया जाए तो वह अवश्य ही अपने धर्म और समाज से जुड़ेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि १००% अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' रहना चाहिए। तीर्थंकर आदिनाथ के पुत्र 'भरत चक्रवर्ती' के नाम से इस भूखंड का नाम भारत पड़ा, इंडिया तो अंग्रेजों की देन है, जिसे उन्होंने असभ्य व अशिक्षित के रूप में हमें कहा था, हमारी पहचान 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

अजीत जी मूलतः राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित 'नेवरिया गांव' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९८१ से आप 'सूरत' में बसे हैं और टेक्सटाइल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ शांती भवन, घोडदोड रोड, सूरत के अध्यक्ष हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!

जिनेश्वर दयाल जैन
अध्यक्ष त्रिकाल चौबीसी मंदिर शिखरजी
गाजियाबाद निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१००८२८८९

जिनेश्वर जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, जैन समाज में 'चातुर्मास' हमें अवसर प्रदान करता है, अपने धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का प्रयास हम करें। 'चातुर्मास' के दौरान गुरु-भगवंतों का एक स्थान पर निवास होता है, उनकी सेवा सुश्रुषा का लाभ लें, उनसे आशीर्वचन प्राप्त करें और अपने जीवन में आत्मसात कर अपने जीवन को सार्थक करें, इसीलिए 'चातुर्मास' विशेष महत्वपूर्ण होता है। वर्तमान में हमारे यहां साध्वी श्री अंतसमती माताजी का 'चातुर्मास' हो रहा है।

'जैन एकता' आज हमारे समाज के लिए अति आवश्यक है और यह तभी संभव होगा, जब अहंकार और स्वार्थ को त्याग कर निस्वार्थ रूप से सिर्फ 'जैन' बने रहें और उसके लिए ही प्रयास भी करें, तभी 'जैन एकता' संभव हो सकती है, एकता स्थापित होगी तो हमारे समाज की एक अलग ही छवि उभरेगी, इसीलिए 'जैन एकता' बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर हो रही है, इसका कारण आधुनिक शिक्षा प्रणाली और माता-पिता द्वारा अपने बच्चों की शिक्षा पर विशेष जोर देना, उन्हें साथ में संस्कारों पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए, तभी युवा वर्ग अपने धर्म, समाज और संस्कार सभी से जुड़ा रहेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, यह नाम भरत चक्रवर्ती के नाम से पड़ा है और आचार्य श्री विद्यासागर जी ने भी यही कहा है 'इंडिया छोड़ो-भारत बोलो' INDIA अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है तो यह हमारे देश की पहचान कैसे बन सकता है।

जिनेश्वर जी मूलतः उत्तरप्रदेश 'आबूपुर' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, वर्तमान में 'गाजियाबाद' में बसे हुए हैं मोदीनगर कॉलेज में १४ सालों तक मॅथमेटिक्स के प्रोफ़ेसर तथा गाजियाबाद इंटर कॉलेज में २८ सालों तक प्रिंसिपल रहे, इस दौरान २००४ में १००% रिजल्ट रहा, इसके लिए उत्तर प्रदेश शिक्षा निदेशक एवम् सचिव द्वारा शुभकामना संदेश भी प्राप्त हुआ है।

आप सामाजिक धार्मिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं, श्री दिगम्बर जैन मंदिर गाजियाबाद, त्रिकाल चौबीसी शिखरजी एवं २४ समवशरण सोनागिरी मध्य प्रदेश तथा कवि नगर दिगम्बर जैन मंदिर के अध्यक्ष हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

दिलीप दोषी
निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष भारतीय जैन संगठना म.प्र.
इंदौर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४०६६०९९९८

दिलीप जी 'चातुर्मास' के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' हमारे लिए स्वर्ण अवसर है, गुरु महाराज के सानिध्य का अवसर प्राप्त करने का, उनसे जुड़ने का, जिससे हमारे जीवन का सदुपयोग तो होता ही है साथ ही हमारे आध्यात्मिक जीवन में एक नया अध्याय जुड़ता है, जिससे हमारी रुचि और जीवनचर्या में भी परिवर्तन आता है, धर्म की प्रभावना बढ़ती है, इसीलिए 'चातुर्मास' का आज के परिपेक्ष में विशेष महत्व है, इसीलिए 'चातुर्मास' का अच्छा और अधिक उपयोग करना चाहिए।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, बाइस संप्रदाय सभी के तीर्थंकर एक हैं, सभी जैन धर्म के आमनाय को मानते हैं, भले ही हमारी आराधना करने की पद्धतियां अलग-अलग होती हैं, इसीलिए इस पर विशेष जोर न देते हुए, हम सभी सिर्फ 'जैन' हैं, इस पर जोर देना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर होती जा रही है, इसका कारण कहीं ना कहीं परिवार भी है, क्योंकि परिवार ही निर्लिप्त हो रहे हैं, धर्म और समाज से दूर जा रहे हैं, जिससे युवा पीढ़ी भी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, वह आधुनिक जीवन शैली को अधिक अपनाने लगी है, जो हमारे समाज के लिए सबसे बड़ा घातक है, इसके लिए समाज को भी प्रयास करना चाहिए, युवाओं को पाठशाला के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए, उनका उचित मार्गदर्शन करना चाहिए, तभी युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि इसमें कोई दो मत होना ही नहीं चाहिए, अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहे। आधुनिकता के कारण सभी भारत को इंडिया बोलने लगे हैं, पर हमारी पहचान हमेशा से 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

दिलीप जी मूलतः 'इंदौर' के निवासी हैं। आपका परिवार यहां लगभग डेढ़ सौ सालों से भी अधिक समय से बसा हुआ है, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'इंदौर' में ही संपन्न हुई है, यहां गारमेंट के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। इंदौर में संचालित सन्मति हाई स्कूल के पिछले २५ सालों से मानद सेवा दे रहे हैं, २०२१ से उपाध्यक्ष की भूमिका निभा रहे है। 'भारतीय जैन संगठना' मध्य प्रदेश के ६ सालों तक प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं, पिछले २० सालों से संगठन में सक्रिय हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

पारस डोसी
मंत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
ब्यावर निवासी-हैदराबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७३३११३८४७३

पारस जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज हमारी भाग दौड़ भरी जिंदगी में हम सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए इतना व्यस्त हो जाते हैं कि हम धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति की ओर ध्यान ही नहीं दे पाते, अतः 'चातुर्मास' के चार महीने हमें वह अवसर प्राप्त होता है कि हम अपने धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन की उन्नति कर सकें, हमें साधु-संत के सानिध्य का अवसर प्राप्त होता है, उनके आशीर्वचन और धर्म से जुड़ी बातों की जानकारी होती है, धर्म की प्रभावना बढ़ती है इसीलिए 'चातुर्मास' का विशेष महत्व होता है हमारे यहां वर्तमान में महासति देवेंद्रप्रभा जी आदि ठाणा तीन का चातुर्मास हो रहा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है की जैन समाज को यदि आगे बढ़ना है तो 'एकता' होना बहुत जरूरी है, एकता न होना सबसे बड़ी कमी है हमारे जैन समाज की। हर कोई अपना संघ, अपना पंथ, के अनुसार चलना चाहता है। हमारे जैन समाज की संख्या वैसे ही बहुत कम है, इसलिए हमें अपनी सोच को बड़ी रखकर 'जैन एकता' के लिए प्रयास करना होगा, तभी यह प्रयास सफल हो सकता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है बस उन्हें उचित मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का तो एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

पारस जी मूलतः राजस्थान स्थित 'ब्यावर' के निवासी हैं, आपका जन्म व व सम्पूर्ण शिक्षा 'हैदराबाद' में संम्पन्न हुई है, यहां आप टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरिंग व ग्रेनाइट इंडस्ट्रीज से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों से भी सक्रिय रहते हैं। 'जैन हितेषी श्रावक संघ' पूरे दक्षिण प्रमुख की भूमिका निभा रहे हैं। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हैदराबाद में मंत्री व जैन युवा परिषद हैदराबाद के कार्यकारिणी सदस्य हैं, रोटरी क्लब से भी जुड़े हुए हैं, इसमें पूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं, इस वर्ष २०२४ के साध्वीरत्न श्री देवेंद्रप्रभाजी म.सा आदि ठाणा ३ के जैन श्री संघ मलकापेट के तत्वावधान में चातुर्मास में प्रधान संयोजक के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत!

किशोर कुमार मुथा
अध्यक्ष, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणोपासक संघ रामकोट
फलोदी निवासी-हैदराबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९२४७३९९००३

किशोर जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज के परिवेश में संतों का 'चातुर्मास' होना बहुत जरूरी है क्योंकि श्रावक और भावी पीढ़ी को यदि अपने धर्म और समाज से जुड़ना है और जैन धर्म की सही जानकारी देना हो तो 'चातुर्मास' ही एक मात्र माध्यम है, धर्म और समाज से जुड़ने का, क्योंकि सही जानकारी साधु-संतों के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है, इसीलिए 'चातुर्मास' होना बहुत जरूरी है, हमारे यहां प. पूज्य डॉ. सुप्रभा म.सा. आदि ठाणा ६ का चातुर्मास हो रहा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि एकता आज पूरे जैन समाज के लिए जरूरी है। पंथों में बंटे होने के कारण हमारे समाज में संगठन नहीं है, एकता नहीं है। आज लोगों में अहम की भावना बढ़ रही है, लोग एक दूसरे के गुरु-भगवंतों को नमन भी नहीं करना चाहते, तो ऐसी स्थिति में एकता कहां से होगी? सभी गुरु भगवंत हमारे लिए पूजनीय हैं। एकता ना होना हमारे समाज का दुर्भाग्य है, इसके लिए सर्वप्रथम तो हमारे गुरु-भगवंतों को ही प्रयास करना होगा, तभी एकता स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी कुछ धर्म से जुड़ी है और कुछ असमंजस और भ्रमित है तो वह अपने धर्म और समाज से कैसे जुड़ पाएंगे? युवाओं को जोड़ने के लिए सबसे पहले उन्हें उचित मार्गदर्शन देना होगा, तभी युवा वर्ग जुड़ पाएगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं समर्थन करता हूं।

किशोर जी मूलतः राजस्थान के 'फलोदी' के निवासी हैं, आपका परिवार १२५ सालों से 'हैदराबाद' में बसा हुआ है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणोपासक संघ रामकोट हैदराबाद के अध्यक्ष हैं, जैन सेवा संघ से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

प्रदीप पटवा
उपाध्यक्ष जीतो पूर्वी संभाग
भीनासर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९०३०३४६७९

प्रदीप जी 'चातुर्मास' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'चातुर्मास' का जैन धर्म में विशेष महत्व है, हमारे यहां २००७ में आचार्य श्री रामेश जी म.सा. का 'चातुर्मास' कोलकाता में हुआ था, उसी के बाद से पूरे पूर्वी संभाग में लोगों में धर्म के प्रति जागृति निर्माण हुई, उसके पहले हमें तो यह अनुमान ही नहीं था कि साधुमार्गी जैन संघ का इतना बड़ा समूह है, बहुत से परिवारों से जुड़ना हुआ। 'चातुर्मास' के दौरान लोगों में धार्मिक भावनाएं जागृत हुई, कहा जा सकता है कि धार्मिक क्रांति की लहर दौड़ पड़ी थी, वरिष्ठों के साथ-साथ बच्चों व महिलाओं का भी जुड़ना हुआ, तब से हर बार किसी न किसी गुरु महाराज सा., साधु-संतों, समणी जी से विनती कर प्रत्येक वर्ष 'चातुर्मास' करने प्रयास किया जाता है, इस वर्ष हमारे यहां हावड़ा में साध्वी श्री सम्याश्री म. सा. का 'चातुर्मास' हो रहा है। 'चातुर्मास' के माध्यम से गुरु भगवंतों के सानिध्य का अवसर प्राप्त होता है, धार्मिक क्रियाएं और धार्मिकता बढ़ती हैं, जिससे हमारे मन में भी आध्यात्मिक भावनाएं जागृत होती हैं, आध्यात्मिक जीवन की ओर हम बढ़ते हैं, इसीलिए 'चातुर्मास' का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' हमारे समाज की सबसे बड़ी जरूरत है और इसके लिए हर पंथ के हर समुदाय के सभी गुरु महाराज को एकसाथ-एकमंच पर आना चाहिए, तभी यह कार्य संभव हो सकता है, हमारी संख्या वैसे ही कम होती जा रही है, यदि हम इसी तरह पंथ में बंटते रहेंगे तो हमारा वर्चस्व ही समाप्त हो जाएगा, अतः 'जैन एकता' बहुत जरूरी है, 'जीतो' जैसी संस्था इस क्षेत्र में विभिन्न प्रयास कर रही है।

आज की युवा पीढ़ी का अपने धर्म और समाज के प्रति जुड़ाव बढ़ रहा है, यह हमारे गुरु-भगवंतों का ही पुण्य प्रताप है कि उनके सानिध्य में युवाओं में अपने धर्म और समाज के प्रति जागृति निर्माण हो रही है, युवाओं को उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो वह अवश्य ही समाजवाद धर्म से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि जरूर अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

प्रदीप जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'भीनासर' के निवासी हैं, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले कई सालों से आप 'कोलकाता' में बसे हुए हैं, स्नातक और मैनेजमेंट की शिक्षा आपने 'कोलकाता' से ही ग्रहण की है, वर्तमान में एक्सपोर्ट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जैन हॉस्पिटल हावड़ा के सचिव हैं, पूर्व में अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ पूर्वी संभाग के राष्ट्रीय मंत्री रहे हैं, जीतो पूर्वी जोन के उपाध्यक्ष हैं। साधुमार्गी जैन संघ कोलकाता के चार वर्षो तक अध्यक्ष रहे, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

- Investment Banking
- NBFC
- Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com

10+ NATIONALISE BANK

20+ PRIVATE BANKS

30+ FOREIGN BANKS

50+ NBFC

100+ CO-OPERATIVE BANKS

Which Institute Should I Prefer ?

Who Will be fasted in Providing Loan ?

Who Will Give Lower Rate of Interest ?

Who Will give Higher Loan Eligibility ?

Confused ? Can't Decide ?

Why go to various Institution for your fund requirement ?

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Shall cater to your funds by selecting the Financial Institution best suited for you which has :

- Speedy Approval.
- Lowest Processing Fees.
- Fast Disbursement.
- Quick Processing.
- Lowest Rate Of Interest.
- Higher Eligibility.

Do You Know ?

- Working Capital loan is available at approx 11% to 12% p.o.
- Loan is available against plot of NA Land.
- Loan to Builders & developers (Rera Compliant) Within 20-25 working days.
- Unsecured loan between 12-14 % p.o.
- Businessman can avail loan upto Rs. Five crores without collateral under government sponsored scheme
- Eligibility of Housing loan can be increased by considering projected income.
- Loan is available upto 90% of the property value.
- Small business can avail working capital loan upto Rs. 10 Lacs without collateral under government sponsored scheme.
- Loan is available for educational Institute against discounting of future fees.

Contact Now :

Just4uloan
Educate - Empower - Enhance - Engage

Reduce your interest cost without reducing your loan.

Enhance your eligibility.

Loan at your Door Steps.

enquiry@just4uloan.com | www.just4uloan.com

Call Now : 022 - 28615154

Address : 504, Rainbow Chambers, Near MTNL Exchange, S.V. Road, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th July 2024 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

ONLY ₹50/- PER PC

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598